श्रेणी अवरोहण

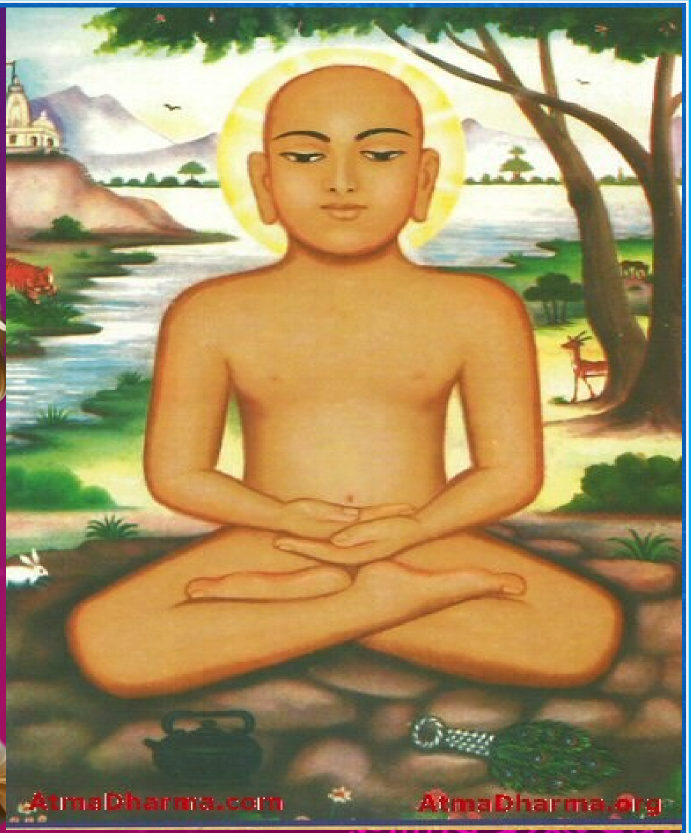

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण

सिद्धे जिणिंदचंदे, आयरिय-उवज्झाय-साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥1॥

बादरपढमे किट्टी, मोहस्स य आणुपुव्विसंकमणं ।
णट्ठं ण च उच्छिट्ठं, फड्डयलोहं तु वेदयदि ॥316॥

- अन्वयार्थ - (बादरपढमे) अनिवृत्तिकरण बादर साम्पराय के प्रथम समय में (किट्टी) सूक्ष्म कृष्टियाँ (य) और (मोहस्स आणुपुव्विसंकमणं) मोह का आनुपूर्वी संक्रमण (णट्ठं) नष्ट हुआ। (तु) परन्तु (उच्छिट्ठं) उच्छिष्टावलि मात्र निषेक (ण) नष्ट नहीं हुए। (च) और वहाँ (फड्डयलोहं) स्पर्धकगत लोभ का (वेदयदि) वेदन करता है ॥316॥

www.JainKosh.org

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

इसके अनंतर समय में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में प्रवेश होता है ।

प्रथम समय में ही सर्व कृष्टि का द्रव्य; स्वरूप से विनष्ट होकर पूर्व स्पर्धकरूप परिणत हो जाता है । जो पहले जघन्य वर्ग से भी अनंतगुणाहीन द्रव्य था, वह पूर्ववत् अनंत गुणारूप पूर्वस्पर्धक में परिणत हो जाता है ।

मात्र उच्छिष्टावली प्रमाण सूक्ष्म कृष्टि के निषेक शेष रहते हैं । ये प्रत्येक समय में उदयागत पूर्व स्पर्धकों में स्तिबुक संक्रमण द्वारा संक्रमित होकर निर्जरित होते हैं ।

www.JainKosh.org

अवरोहक सूक्ष्म-सांपराय का अंतिम समय

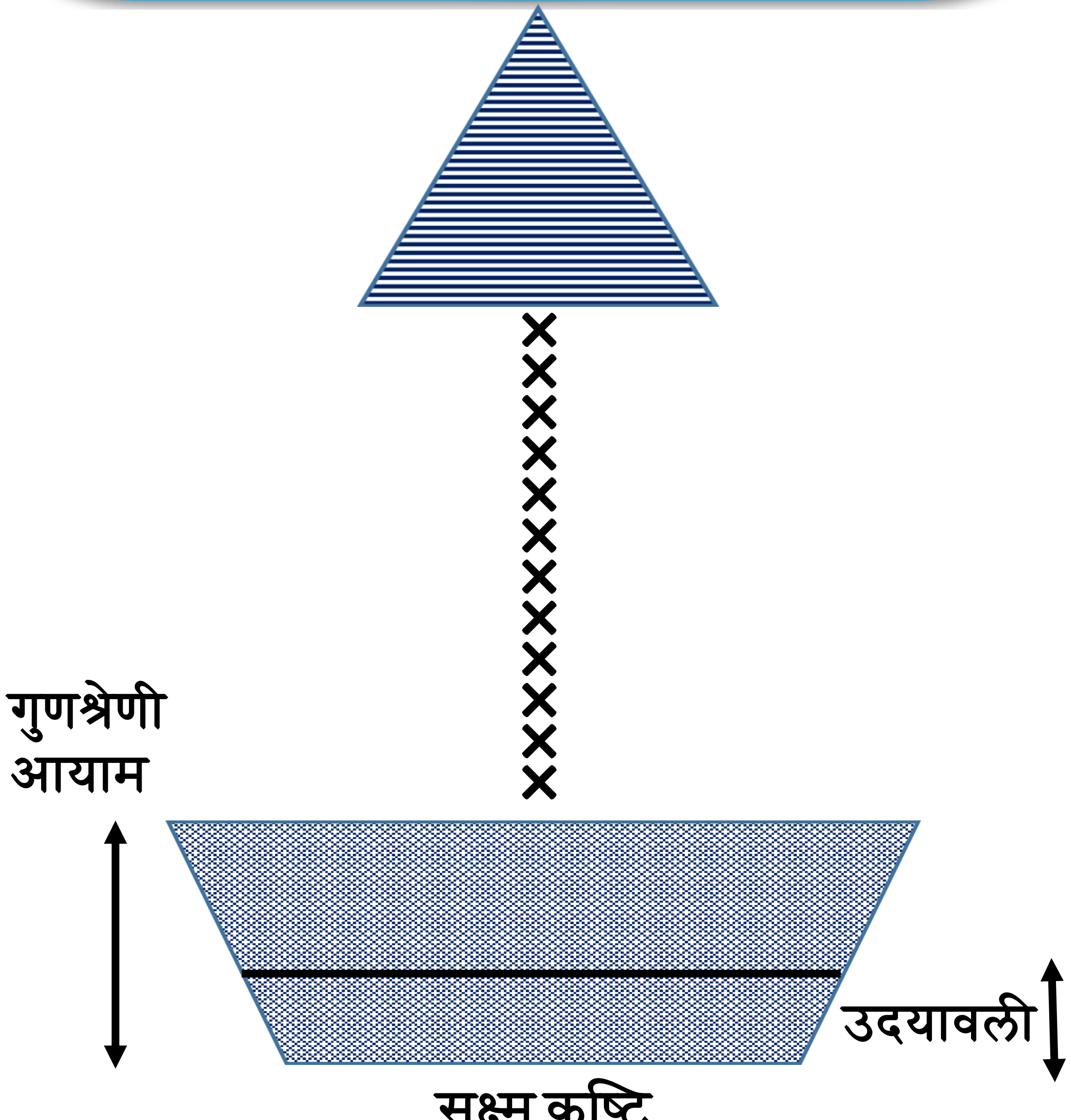

अवरोहक अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय

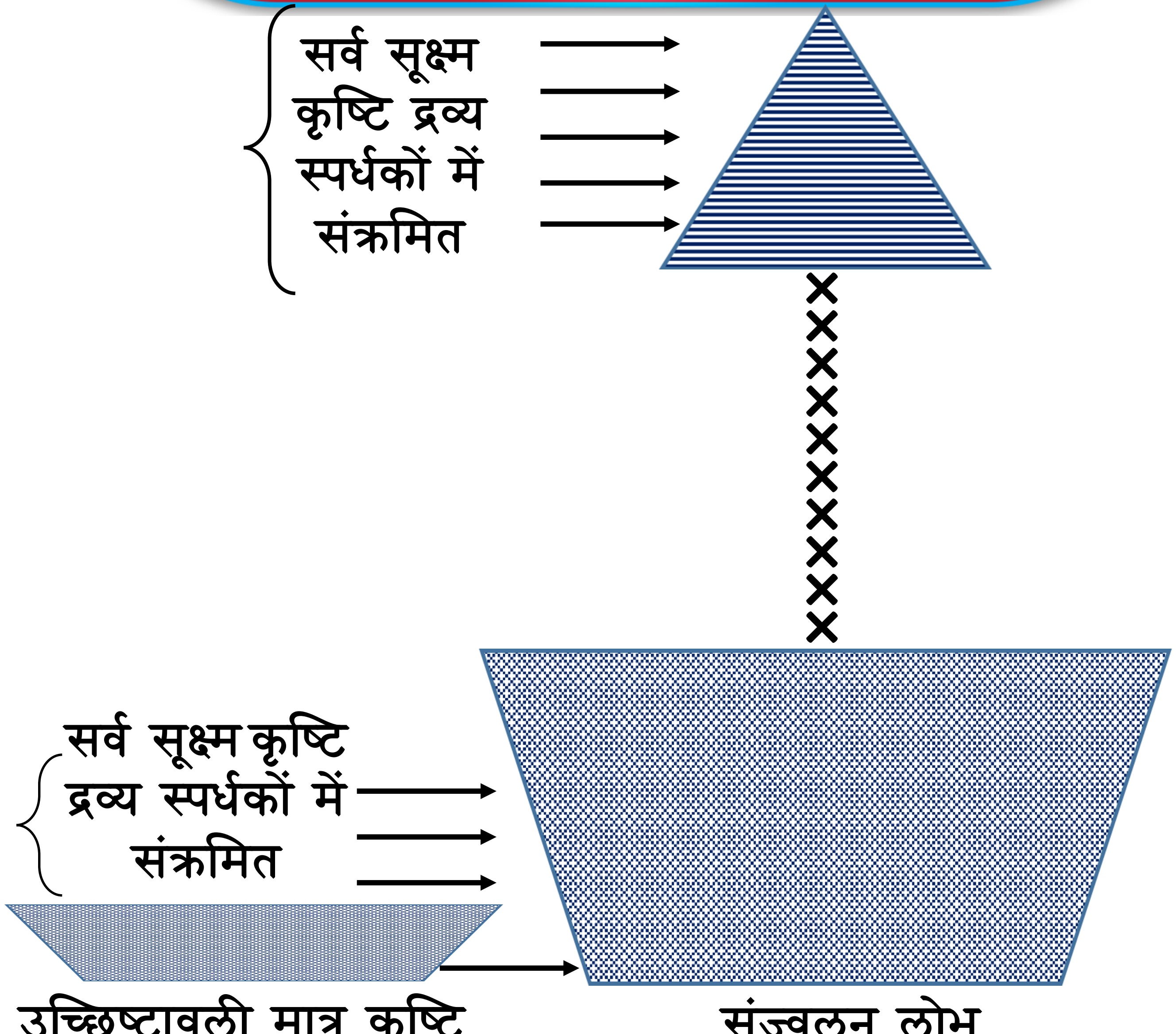

अनानुपूर्वी संक्रमण

प्रथम समय में ही मोह का आनुपूर्वी संक्रमण का नियम भी टूट जाता है ।

संज्वलन लोभ का बंध प्रारंभ होने से 2 लोभ का द्रव्य संज्वलन लोभ में संक्रमित होना प्रारंभ होता है।

व्यक्ति अपेक्षा आनुपूर्वी संक्रम नष्ट नहीं हुआ परन्तु शक्ति अपेक्षा नष्ट हुआ है । यद्यपि यहाँ अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान लोभ का द्रव्य बध्यमान संज्वलन लोभ में ही संक्रमित हो रहा है, जो आनुपूर्वी संक्रमण के नियम का भंग नहीं करता ।

तथापि यहाँ आनुपूर्वी संक्रम का नियम नहीं रहा है क्योंकि संज्वलन लोभ का द्रव्य अन्य सजातीय कषायों में संक्रमित होने योग्य हो गया है।

यद्यपि यहाँ इस स्थान पर अन्य क्रोधादि कषाय का बंध नहीं होने से लोभ का द्रव्य उनमें संक्रमित नहीं हो रहा, तदपि वह संक्रम-योग्य होने से आनुपूर्वी संक्रम का नियम नहीं रहा है ।

प्रश्न – ऐसा शक्ति अपेक्षा आनुपूर्वी संक्रम का अभाव सूक्ष्म-सांपराय में भी कहा जा सकता था ?

उत्तर – नहीं, वहाँ मोहनीय का बंध ही नहीं होने से किसी प्रकार का संक्रमण नहीं होता, तो 'आनुपूर्वी से रहित संक्रमण की शक्ति यहाँ है' – ऐसा कैसे कह सकते हैं!

www.JainKosh.org

लोभ का गुणश्रेणी आयाम

अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय में ही संज्वलन लोभ के द्रव्य का अपकर्षण करके नवीन उदयादि गुणश्रेणि बनाता है ।

संज्वलन लोभ की इस उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी का आयाम अवरोहक के बादर लोभ वेदक काल से एक आवली अधिक है । कुल लोभ वेदक काल का कुछ अधिक $\frac{2}{3}$ भाग आयाम है ।

अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान लोभ का गुणश्रेणि आयाम भी इतना ही होता है, परंतु उदयावली-बाह्य होता है ।

अपकृष्ट द्रव्य को पूर्ववत् विभाग करके निक्षिप्त करता है ।

द्वितीयादि समयों में भी इसी प्रकार गुणश्रेणि निक्षेप होता है । परंतु पूर्व के द्रव्य से असंख्यात गुणाहीन द्रव्य अपकर्षित होता है ।

ओदरबादरपढमे, लोहस्संतोमुहुत्तियो बंधो ।
दुदिणंतो घादितिये, चउवस्संतो अघादितिये ॥317॥

- अन्वयार्थ - (ओदरबादरपढमे) उतरने वाले बादर सांपराय के प्रथम समय में (लोहस्स) लोभ का (बंधो) स्थिति-बंध (अंतोमुहुत्तियो) अंतर्मुहूर्त मात्र, (घादितिये) तीन घातियों का (दुदिणंतो) दो दिन के भीतर और (अघादितिये) तीन अघातियों का (चउवस्संतो) चार वर्ष के भीतर होता है ॥317॥

अवरोहक अनिवृत्तिकरण में स्थिति-बंध

कर्म	प्रथम समय	अंतर्मुहूर्त पश्चात्	लोभ वेदककाल के 1/3 भाग का संख्यात भाग बीतने पर
संज्वलन लोभ	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	मुहूर्त पृथक्त्व
3 घातिया	2 दिन-	दिवस पृथक्त्व	संख्यात हजार वर्ष
नाम-गोत्र	4 वर्ष-	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात हजार वर्ष
वेदनीय	6 वर्ष-	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात हजार वर्ष

इस प्रकार संख्यात हजार स्थिति-बंध बीतने पर लोभ वेदककाल समाप्त होता है ।

आरोहक के लोभ वेदककाल से अवरोहक का लोभ वेदककाल कुछ कम होता है । इसी प्रकार आगे मायादि वेदक काल का भी जानना ।

www.JainKosh.org

ओदरमायापढमे, मायातिण्हं च लोभतिण्हं च ।
ओदरमायावेदग-कालादहियो दु गुणसेढी ॥318॥

- अन्वयार्थ- (ओदरमायापढमे) उतरने वाले मायावेदककाल के प्रथम समय में (माया तिण्हं) तीन माया (च) और (लोभतिण्हं च) तीन लोभ की (गुणसेढी) गुणश्रेणि (ओदरमायावेदगकालादहियो दु) उतरने वाले के मायावेदककाल से अधिक करता है ॥318॥

www.JainKosh.org

माया वेदक काल एवं गुण श्रेणी

लोभवेदक काल के पश्चात् मायावेदक काल प्रारंभ होता है ।

मायावेदक काल के प्रथम समय में ही द्वितीय स्थिति में स्थित संज्वलन माया का अपकर्षण करके उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी करता है ।

गुणश्रेणी का आयाम माया वेदक काल से एक आवली अधिक होता है ।

शेष 2 माया, तथा 3 लोभ – ये 5 प्रकृतियाँ उदयवान नहीं हैं । अतः इनकी गुणश्रेणी उदयावली-बाह्य अवस्थित आयाम वाली बनायी जाती है । गुणश्रेणी का आयाम संज्वलन मायावत् है ।

ज्ञानावरणादि 6 कर्मों की गलितावशेष गुणश्रेणि पूर्ववत् प्रवृत्त ही रही है ।

अनानुपूर्वी संक्रमण

यहाँ से ही 3 प्रकार का लोभ द्रव्य, 2 प्रकार का माया द्रव्य संज्वलन माया में संक्रमित होता है ।

इसी प्रकार 2 लोभ, 3 माया का द्रव्य संज्वलन लोभ में संक्रमित होता है ।

इन दो का बंध होने से इन दो में ही संक्रमण होता है, अन्य में नहीं ।

3 लोभ, 3 माया की गुणश्रेणी

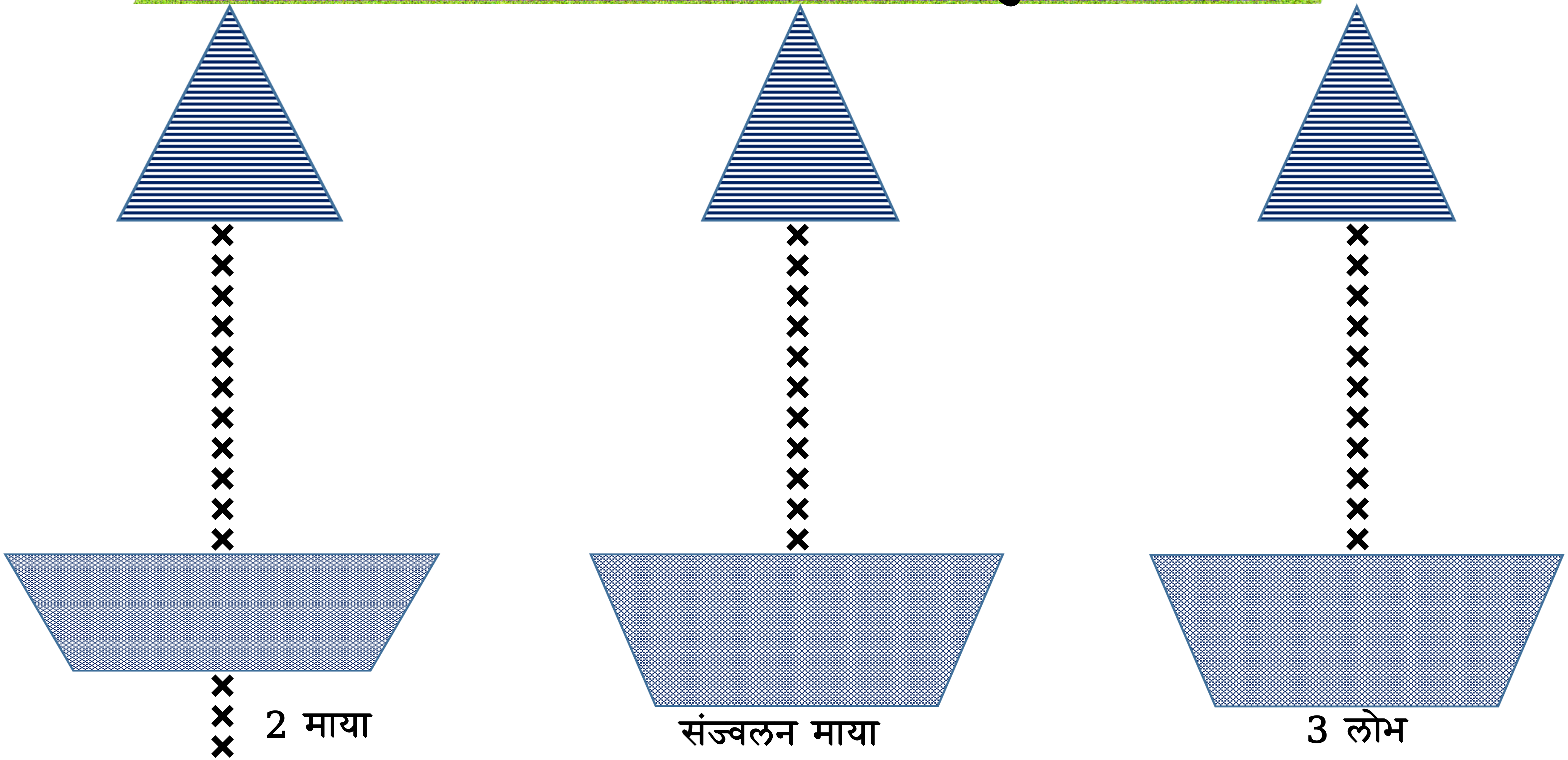

पूर्व गुणश्रेणी होने से 3 लोभ का द्रव्य उदयावली में भी दिखाया है । वर्तमान में उदयावली में नहीं दिया है ।

ओदरमायापढमे, मायालोभे दुमासठिदिबंधो ।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्समेत्ताणि ॥319॥

- अन्वयार्थ - (ओदरमायापढमे) उतरने वाले के मायावेदककाल के प्रथम समय में (मायालोभे) माया व लोभ का (दुमासठिदिबंधो) स्थितिबन्ध दो माह होता है। (पुण) पुनः (छण्हं) शेष छह कर्मों का (वस्साणं संखेज्जसहस्समेत्ताणि) स्थितिबन्ध संख्यात हजार वर्षमात्र होता है ॥319॥

माया वेदककाल में प्रथम स्थिति-बंध

कर्म	स्थिति-बंध
संज्वलन माया, लोभ	2 मास
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष
3 अघातिया	संख्यात हजार वर्ष × संख्यात

इस प्रकार संख्यात हजार स्थिति-बंध करके माया वेदक काल समाप्त होता है ।

इस स्थल पर चढ़ने वाले का ज्ञानावरणादि का प्रत्येक स्थिति-बंध संख्यातगुणा हीन क्रम से होता है, उतरने वाले का ज्ञानावरणादि का प्रत्येक स्थिति-बंध संख्यातगुणा क्रम से होता है ।

चढ़ने वाले का मोहनीय का प्रत्येक स्थिति-बंध विशेषहीन क्रम से होता है, उतरने वाले का मोहनीय का प्रत्येक स्थिति-बंध विशेष अधिक क्रम से होता है ।

ओदरगमाणपढमे, तेत्तियमाणादियाण पयडीणं ।
ओदरगमाणवेदग-कालादहिओ दु गुणसेढी ॥320॥

- अन्वयार्थ - (ओदरगमाणपढमे) अवतारक के मानवेदक के प्रथम समय में (तेत्तियमाणादियाण पयडीणं) उतनी मानादिक प्रकृतियों का (ओदरगमाणवेदग-कालादहिओ दु) अवतारक मानवेदककाल से अधिक (गुणसेढी) गुणश्रेणि करता है ॥320॥

मानवेदक काल

मायावेदक काल के पश्चात् मानवेदक काल प्रारंभ होता है ।

मानवेदक काल के प्रथम समय में संज्वलन मान द्रव्य का अपकर्षण करके उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी बनाता है ।

गुणश्रेणी का आयाम मानवेदक काल से 1 आवली अधिक होता है ।

शेष अनुदय वाले मोहनीय कर्मों (3 लोभ, 3 माया, 2 मान) की इसी आयाम वाली उदयावली-बाह्य अवस्थित गुणश्रेणी बनाता है ।

बध्यमान कर्मों में (संज्वलन मान-माया-लोभ) सजातीय सारे कर्मों का संक्रमण भी चलता है ।

3 मान, 3 लोभ, 3 माया की गुणश्रेणी

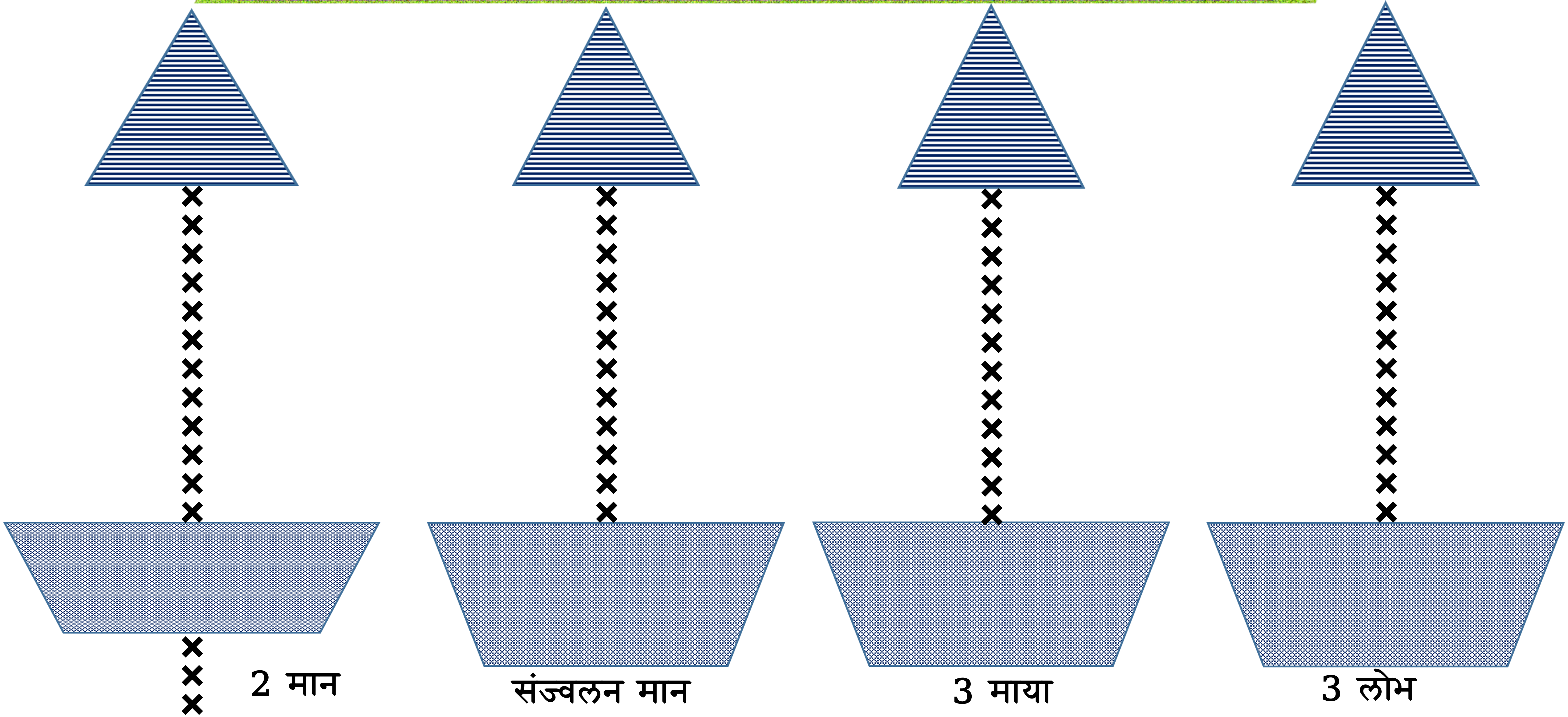

पूर्व गुणश्रेणी होने से 3 लोभ-माया का द्रव्य उदयावली में भी दिखाया है । वर्तमान में उदयावली में नहीं दिया है ।

ओदरगमाणपढमे, चउमासा माणपहुदिठिदिबंधो ।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्समेत्ताणि ॥321॥

- अन्वयार्थ- (ओदरगमाणपढमे) अवतारक (उतरने वाले) मानवेदककाल के प्रथम समय में (माणपहुदिठिदिबंधो) मानादिक कषायों का स्थितिबन्ध (चउमासा) चार माह और (छण्हं पुण) पुनः छह कर्मों का (वस्साणं संखेज्जसहस्समेत्ताणि) संख्यात हजार वर्षमात्र होता है ॥321॥

अवरोहक मानवेदक के प्रथम स्थिति-बंध

कर्म	स्थिति-बंध
संज्वलन मान, माया, लोभ	4 मास
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष
3 अघातिया	संख्यात हजार वर्ष × संख्यात

इस प्रकार संख्यात हजारों स्थिति-बंध करके मान वेदककाल समाप्त होता है ।

ओदरगकोहपढमे, छक्कम्मसमाणया हु गुणसेढी ।
बारकसायाणं पुण, एत्तो गलिदावसेसं तु ॥322॥

- अन्वयार्थ - (ओदरगकोहपढमे) उतरने वाले क्रोधवेदककाल के प्रथम समय में (छक्कम्म-समाणया हु) छह कर्मों के समान (बारकसायाणं) बारह कषायों की (गुणसेढी) गुणश्रेणि करता है। (पुण तु) परन्तु (एत्तो) यहाँ से (गलिदावसेसं) गलितावशेष गुणश्रेणि है ॥322॥

क्रोध वेदक काल

मान वेदक काल के अनंतर समय में क्रोधवेदक काल प्रारंभ होता है ।

क्रोधवेदककाल के प्रथम समय में संज्वलन क्रोध द्रव्य का अपकर्षण करके उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी बनाता है ।

इसके पूर्व तक मोह की अवस्थित गुणश्रेणी बनाई थी । परंतु यहाँ से मोहनीय की भी गुणश्रेणी गलितावशेष बनाता है ।

गुणश्रेणी का आयाम शेष रहा अनिवृत्तिकरण, अपूर्वकरण तथा अपूर्वकरण का संख्यातवां भाग – इतने काल प्रमाण है । यह आयाम उतना ही है जितना ज्ञानावरणादि 6 कर्मों का शेष गुणश्रेणी का आयाम है ।

सारी 12 कषायों का गुणश्रेणी आयाम इतना ही है । मात्र संज्वलन क्रोध की गुणश्रेणी उदयादि है, शेष की उदयावली-बाह्य है ।

नियम

जिस कषाय के उदय से श्रेणी आरोहण किया था, उस कषाय के उदय के पूर्व तक अवस्थित आयाम वाली गुणश्रेणी बनाता है ।

उसी कषाय का उदय प्रारंभ होने पर गुणश्रेणी गलितावशेष बनती है । तथा

उसी कषाय का उदय होने पर अंतरायाम को पूरा जाता है । इस कषाय के उदय के पूर्व तक अंतरायाम भी प्रवृत्त रहा था । यहाँ अंतरायाम भी नष्ट होता है ।

गुणश्रेणी द्रव्य का विभाग

उदयवान संज्वलन क्रोध का अपकृष्ट द्रव्य = स ∂ १२ – ७ | ८ | ओ

$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{प}/\partial}$

$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{प}/\partial} \times \left(\frac{\text{प}}{\partial} - 1\right)$

एकभाग द्रव्य,
उदयादि गुणश्रेणी के लिये

बहुभाग द्रव्य
द्वितीय स्थिति, अंतरायाम के लिये

www.JainKosh.org

अंतरायाम में द्रव्य देने का विधान

1) समपट्टिका द्रव्य

- द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक का जितना प्रमाण है, उतना द्रव्य नीचे अंतरायाम के प्रत्येक निषेक को दिया जाता है । इसे समपट्टिका द्रव्य कहते हैं ।

2) चयहीन द्रव्य

- द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में जो चय का प्रमाण है, उससे दुगुणा चय उसके नीचे की अंतरायाम स्थिति में होगा । यह चय अंतरायाम के प्रथम निषेक से एक-एक चय घटते-घटते अंतिम निषेक में एक चय मात्र दिया जायेगा ।

ऐसे पूर्वोक्त दो द्रव्य अंतरायाम में देने से अंतरायाम का द्रव्य भी द्वितीय स्थिति के गोपुच्छाकार हो जायेगा ।

यह दोनों द्रव्य अपकृष्ट द्रव्य से लेकर अंतरायाम में निक्षिप्त किये जायेंगे ।

इसके पश्चात् भी अपकृष्ट द्रव्य शेष रहता है । उसे अंतरायाम से लेकर ऊपर द्वितीय स्थिति तक चयहीन क्रम से निक्षिप्त किया जाता है ।

इस प्रकार अंतरायाम को पूरा जाता है तथा उदयादि गुणश्रेणी में द्रव्य देकर उदय भी प्रारंभ होता है ।

अंतरपूरण

द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक

- = स ∂ १२ −
  ७ | ८ | १२ +

इतना द्रव्य अंतरायाम के प्रत्येक निषेक को दिया । तब समपट्टिका द्रव्य

- = स ∂ १२ − | 2२
  ७ | ८ | १२ +

प्रथम निषेक का चय

- = प्रथम निषेक / दो गुणहानि = स ∂ १२ −
  ७ | ८ | १२ + | १६

अंतरायाम प्रथम निषेक से नीचे है । इसका चय दुगुना होगा । अत: अंतरायाम का चय

- = स ∂ १२ − | 2
  ७ | ८ | १२ + | १६

www.JainKosh.org

अंतरायाम में देय सर्व चयों का जोड़ = चय × गच्छ × $\frac{\text{गच्छ}+1}{\text{२}}$

$\frac{\text{स } \partial \text{ १२ – । २}}{\text{७ । ८ । १२ + । १६}} \times 2\mathcal{Q} \times \frac{(2\mathcal{Q}+1)}{\text{२}}$

इसे समपट्टिका द्रव्य में जोड़ने पर समपट्टिका द्रव्य कुछ अधिक होता है । $\frac{\text{स } \partial \text{ १२ – । } 2\mathcal{Q} +}{\text{७ । ८ । १२ +}}$

इतने द्रव्य को बहुभाग अपकृष्ट द्रव्य से लेकर अंतरायाम को पूरेंगे । चूंकि यहाँ एक पूर्ण गुणहानि नहीं है, इसलिये इस द्रव्य को मध्यमधन आदि सूत्रों से बांटेंगे ।

शेष रहा बहुभाग अपकृष्ट द्रव्य द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक से अतिस्थापनावली के पूर्व तक चयहीन क्रम से नाना गुणहानि में दिया जाता है ।

संज्वलन क्रोध का अंतर पूरण

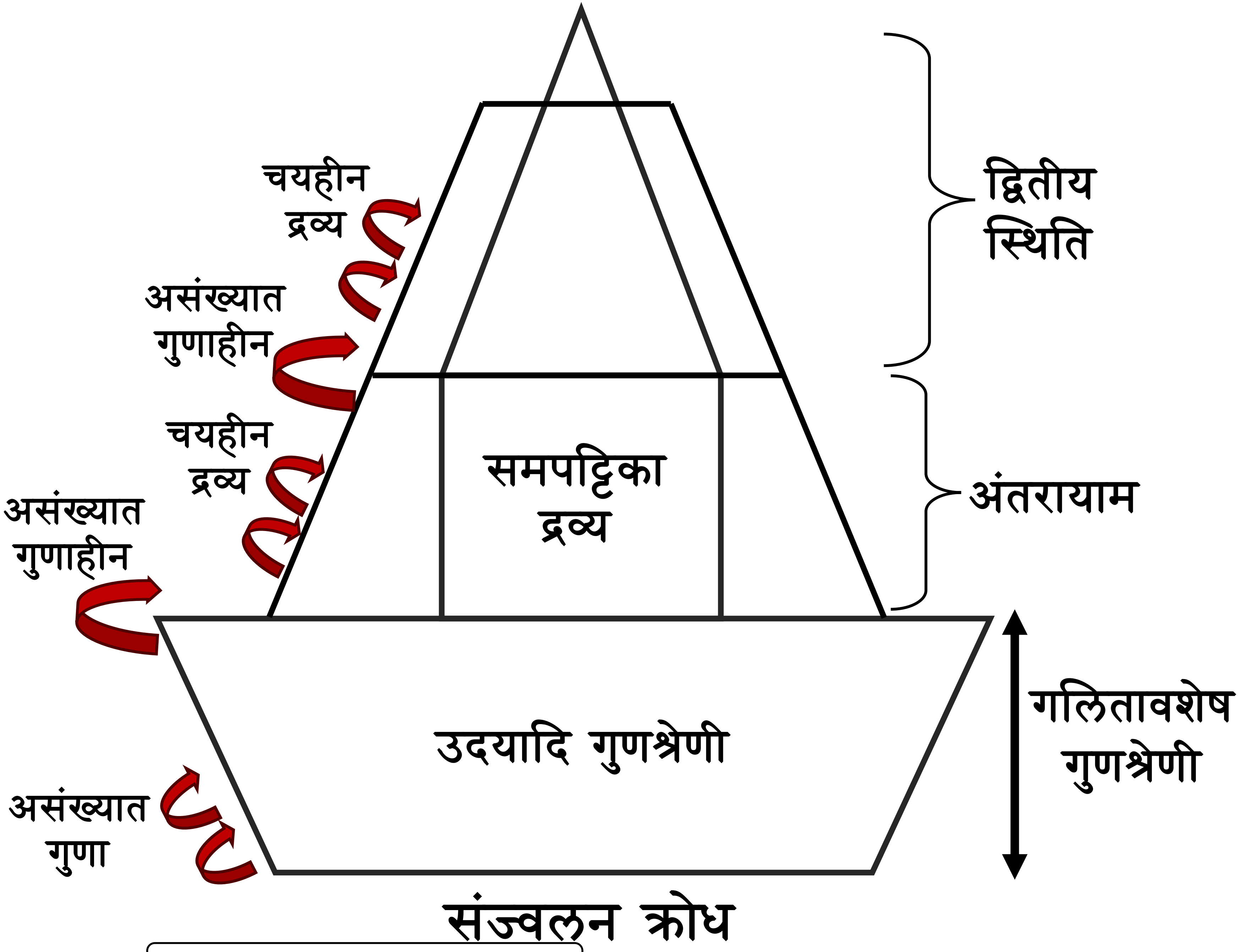

www.JainKosh.org

शेष कर्मों की गुणश्रेणी

शेष 11 कषायों का भी इस तरह ही द्रव्य निक्षिप्त होता है । परंतु उनका गुणश्रेणि का द्रव्य उदयावली के बाहर से निक्षिप्त होता है क्योंकि ये अनुदय प्रकृतियाँ हैं ।

12 कषायों का द्रव्य, बध्यमान संज्वलन क्रोध-4 में बिना आनुपूर्वी संक्रमण के संक्रमित होता है ।

ओदरगकोहपढमे, संजलणाणं तु अट्ठमासठिदी ।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्समेत्ताणि ॥323॥

- अन्वयार्थ - (ओदरगकोहपढमे) उतरनेवाले क्रोधवेदक के प्रथम समय में (संजलणाणं तु) संज्वलन कषायों का (अट्ठमासठिदी) आठ माह प्रमाण स्थिति-बंध होता है। (छण्हं पुण) पुनः छह कर्मों का (वस्साणं संखेज्जसहस्समेत्ताणि) संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थिति-बंध होता है ॥323॥

अवरोहक क्रोधवेदक के प्रथम स्थिति-बंध

कर्म	स्थिति-बंध
संज्वलन-4	8 मास
3 घाति	संख्यात हजार वर्ष
3 अघाति	संख्यात हजार वर्ष × संख्यात

www.JainKosh.org

ओदरगपुरिसपढमे, सत्तकसाया पणट्ठउवसमणा ।
उणवीसकसायाणं, छक्कम्माणं समाणगुणसेढी ॥324॥

- अन्वयार्थ - (ओदरगपुरिसपढमे) उतरने वाले पुरुषवेद के प्रथम समय में (सत्तकसाया) सात नोकषायों की (पणट्ठउवसमणा) उपशामना नष्ट हुई। (उणवीसकसायाणं) उन्नीस कषायों की (12 कषाय + 7 नोकषायों की) (छक्कम्माणं) छह कर्मों के (समाणगुणसेढी) समान गुणश्रेणि होती है ॥324॥

www.JainKosh.org

अवरोहक सवेद में गुण श्रेणी आदि

क्रोधवेदक काल में अंतर्मुहूर्त पश्चात् सवेद भाग प्रारंभ होता है ।

सवेद भाग के प्रथम समय में पुरुषवेद, हास्यादि-6 नोकषायों का उपशमनकरण नष्ट हो जाता है ।

तब पुरुषवेद की उदयादि गुणश्रेणी, शेष 6 नोकषाय की उदयावली-बाह्य गुणश्रेणी बनायी जाती है ।

गुणश्रेणी का आयाम शेष कर्मों की गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम जितना है ।

यहाँ ही इन 7 नोकषायों का अंतरायाम पूरा जाता है ।

गुणश्रेणि निक्षेप, अंतरायाम का पूरण, द्वितीय स्थिति में द्रव्य – यह संज्वलन क्रोधवत् जानना ।

7 नोकषायों का भी आनुपूर्वीरहित संक्रमण प्रारंभ हो जाता है ।

पुरुषवेद का बंध भी प्रारंभ हो जाता है ।

पुंसंजलणिदराणं, वस्सा बत्तीसयं तु चउसट्ठी ।
संखेज्जसहस्साणि य, तक्काले होदि ठिदिबंधो ॥325॥

- अन्वयार्थ- (तक्काले) उस काल में (पुंसंजलणिदराणं) पुरुषवेद, संज्वलन कषाय और अन्य कर्मों का (ठिदिबंधो) स्थिति-बंध क्रमशः (बत्तीसयं तु चउसट्ठी य संखेज्जसहस्साणि वस्सा) बत्तीस वर्ष, चौसठ वर्ष और संख्यात हजार वर्ष होता है। ॥325॥

अवरोहक सवेद का प्रथम स्थिति-बंध

कर्म	स्थिति-बंध
पुरुषवेद	32 वर्ष
संज्वलन-4	64 वर्ष
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष
3 अघातिया	संख्यात हजार वर्ष × संख्यात

www.JainKosh.org

पुरिसे दु अणुवसंते, इत्थी उवसंतगो त्ति अद्धाए ।
संखाभागासु गदेससंखवस्सं अघादिठिदिबंधो ॥326॥

- अन्वयार्थ - (पुरिसे दु अणुवसंते) पुरुषवेद अनुपशान्त होने पर (इत्थी उवसंतगो त्ति) स्त्रीवेद जब तक उपशान्त है तब तक (अद्धाए) नीचे के काल का (संखाभागासु गदेस) संख्यात बहुभाग जाने पर (अघादिठिदिबंधो) अघातिकर्मों का स्थिति-बंध (असंखवस्सं) असंख्यात वर्ष प्रमाण होता है ॥326॥

णवरि य णामदुगाणं, वीसियपडिभागदो हवे बंधो ।
तीसियपडिभागेण य, बंधो पुण वेयणीयस्स ॥327॥

- अन्वयार्थ - (णवरि य) विशेष यह है कि (णामदुगाणं) नामद्विक का अर्थात् नाम और गोत्र कर्म का (बंधो) स्थिति-बंध (वीसियपडिभागदो) वीसिय के अनुपात से (हवे) होता है
- (य) और (पुण) पुनः (वेयणीयस्स बंधो) वेदनीय का बंध (तीसियपडिभागेण) तीसिय के अनुपात से होता है अर्थात् नाम-गोत्र से डेढ़ गुणा वेदनीय का स्थितिबन्ध होता है ॥327॥

www.JainKosh.org

पुरुषवेद के अनुपशांत होने के पश्चात् अभी भी स्त्रीवेद उपशांत है ।

स्त्रीवेद जब तक उपशांत है, उस काल का संख्यात बहुभाग बीतने पर 3 अघाति कर्मों का स्थिति-बंध असंख्यात वर्ष प्रमाण प्रारंभ हो जाता है ।

स्त्रीवेद अनुपशांत होने के पूर्व स्थिति-बंध

कर्म	स्थिति-बंध	अल्प-बहुत्व
पुरुषवेद, 4 संज्वलन	संख्यात हजार वर्ष	स्तोक
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात गुणा
नाम-गोत्र	असंख्यात वर्ष	असंख्यात गुणा
वेदनीय	असंख्यात वर्ष	विशेष अधिक

थीअणुवसमे पढमे, वीसकसायाण होदि गुणसेढी ।
संढुवसमो त्ति मज्झे, संखाभागेसु तीदेसु ॥328॥

- अन्वयार्थ - (थी अणुवसमे) स्त्रीवेद का उपशम नष्ट होने पर (पढमे) प्रथम समय में (वीसकसायाण) बीस कषायों की (गुणसेढी) गुणश्रेणी होती है।
- (संढुवसमो त्ति) नपुंसकवेद के उपशम पर्यन्त (मज्झे) बीच के काल में (संखाभागेसु तीदेसु) संख्यात बहुभाग काल व्यतीत होने पर ... (आगे की गाथा में कहते हैं) ॥328॥

स्त्रीवेद अनुपशांत

इसके पश्चात् संख्यात हजार स्थिति-बंध के बीतने पर स्त्रीवेद का उपशमन भी समाप्त हो जाता है ।

अब स्त्रीवेद का द्रव्य भी संक्रमण, अपकर्षण के योग्य हो गया है ।

इस ही समय स्त्रीवेद के भी द्रव्य का अपकर्षण करके उदयावली-बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणी बनाता है ।

गुणश्रेणी का आयाम शेष मोहनीय कर्मों जितना है ।

इस अपकृष्ट द्रव्य का निक्षेपण गुणश्रेणी में, अंतर में और द्वितीय स्थिति में पूर्ववत् करता है ।

इस प्रकार यहाँ 12 कषाय, 8 नोकषाय का द्रव्य; गुणश्रेणी, अंतरायाम और द्वितीय स्थिति में निक्षिप्त किया जाता है ।

घादितियाणं णियमा, असंखवस्सं तु होदि ठिदिबंधो ।
तक्काले दुट्ठाणं, रसबंधो ताण देसघादीणं ॥329॥

- अन्वयार्थ - (घादितियाणं) तीन घातियों का (ठिदिबंधो) स्थितिबन्ध (णियमा) नियम से (असंखवस्सं तु) असंख्यात वर्ष (होदि) होता है।
- (तक्काले) उसी काल में (ताण देसघादीणं) उन तीन घातियों की देशघाति प्रकृतियों का (दुट्ठाणं) लता-दारु के समान द्विस्थानरूप (रसबंधो) अनुभाग-बंध होता है ॥329॥

स्त्रीवेद के अनुपशांत होने के पश्चात् अभी भी नपुंसकवेद उपशांत है ।
नपुंसकवेद जब तक उपशांत है, उस काल का संख्यात बहुभाग बीतने पर यह विशेष होता है –

- 1) 3 घाति कर्मों का स्थिति-बंध असंख्यात वर्ष प्रमाण होना प्रारंभ होता है ।
- 2) इन्हीं 3 घाति कर्मों की देशघाती प्रकृतियों का अनुभाग-बंध द्विस्थानीय हो जाता है । इसके पूर्व तक इनका एक-स्थानीय बंध हो रहा था । (4 ज्ञानावरण, 3 दर्शनावरण, 5 अंतराय)

www.JainKosh.org

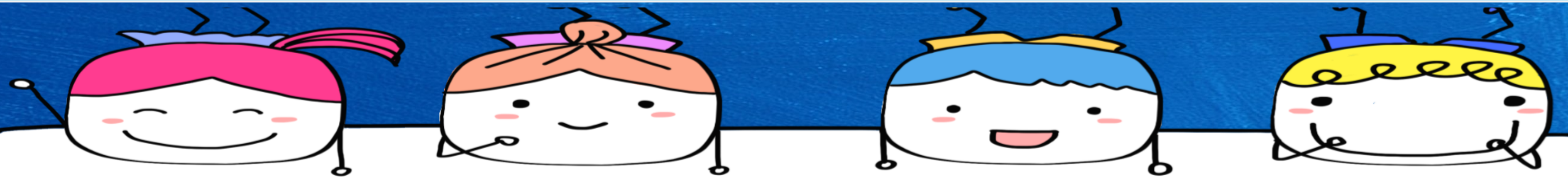

नपुंसकवेद अनुपशांत होने के पूर्व बंध

कर्म	स्थिति-बंध	अल्पबहुत्व	अनुभाग-बंध
पुरुषवेद, 4 संज्वलन	संख्यात हजार वर्ष	स्तोक	एक-स्थानीय
3 घाति	असंख्यात वर्ष	असंख्यात गुणा	द्वि-स्थानीय
नाम-गोत्र	असंख्यात वर्ष	असंख्यात गुणा	चतु-स्थानीय
वेदनीय	असंख्यात वर्ष	विशेष अधिक	चतु-स्थानीय

संढणुवसमे पढमे, मोहिगिवीसाण होदि गुणसेढी ।
अंतरकदो त्ति मज्झे, संखाभागासु तीदासु ॥330॥

- अन्वयार्थ - (संढणुवसमे) नपुंसकवेद के उपशमन का नाश होने पर (पढमे) प्रथम समय में (मोहिगिवीसाण) मोहनीय की इक्कीस प्रकृतियों की (गुणसेढी) गुणश्रेणि (होदि) होती है।
- (अंतरकदो त्ति) अंतरकृत पर्यन्त (मज्झे) मध्य के काल में (संखाभागासु तीदासु) संख्यात बहुभाग व्यतीत होने पर... (आगे की गाथा में कहते हैं) ॥330॥

www.JainKosh.org

नपुंसकवेद अनुपशांत

इसके पश्चात् संख्यात हजार स्थिति-बंध के बीतने पर नपुंसकवेद का उपशमन भी समाप्त हो जाता है ।

अब नपुंसकवेद का द्रव्य भी संक्रमण, अपकर्षण के योग्य हो गया है ।

इस ही समय नपुंसकवेद के भी द्रव्य का अपकर्षण करके उदयावली-बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणी बनाता है ।

गुणश्रेणी का आयाम शेष मोहनीय कर्मों जितना है ।

इस अपकृष्ट द्रव्य का निक्षेपण गुणश्रेणी में, अंतर में और द्वितीय स्थिति में पूर्ववत् करता है ।

इस प्रकार यहाँ 12 कषाय, 9 नोकषाय का द्रव्य; गुणश्रेणी, अंतरायाम और द्वितीय स्थिति में निक्षिप्त किया जाता है ।

इस प्रकार सभी 21 कर्मों का अंतरायाम नष्ट हो गया ।

मोहस्स असंखेज्जा, वस्सपमाणा हवेज्ज ठिदिबंधो। ताहे तस्स य जादं, बंधं उदयं च दुट्ठाणं ॥331॥

- अन्वयार्थ - (मोहस्स) मोहनीय का (ठिदिबंधो) स्थितिबन्ध (असंखेज्जा वस्सपमाणा) असंख्यात वर्ष प्रमाण (हवेज्ज) होता है।
- (य) और (ताहे) उस समय में (तस्स) उसका (दुट्ठाणं) द्विस्थानरूप (बंधं उदयं च) अनुभाग-बंध और उदय (जादं) हुआ ॥331॥

नपुंसकवेद का उपशमन नष्ट होने के पश्चात् आरोहक के अनिवृत्तिकरण में अंतरकरण समाप्त होने का जो समय था, उस काल का संख्यात बहुभाग बीतने पर निम्न क्रिया-विशेष होते हैं -

1) मोहनीय का असंख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति-बंध होने लगता है ।

2) मोहनीय का अनुभाग-बंध द्विस्थानीय होने लगता है ।

3) मोहनीय का अनुभाग-उदय द्विस्थानीय होने लगता है । इसके पूर्व मोहनीय का एकस्थानीय उदय चल रहा था ।

www.JainKosh.org

अंतरकरण वाला काल प्राप्त करने के पहले

कर्म	स्थिति-बंध	अल्पबहुत्व	अनुभाग-बंध
पुरुषवेद, 4 संज्वलन	असंख्यात वर्ष	स्तोक	द्वि-स्थानीय
3 घाति	असंख्यात वर्ष	असंख्यात गुणा	द्वि-स्थानीय
नाम-गोत्र	असंख्यात वर्ष	असंख्यात गुणा	चतु-स्थानीय
वेदनीय	असंख्यात वर्ष	विशेष अधिक	चतु-स्थानीय

उपशम श्रेणी चढ़ते समय मोहनीय का संख्यात वर्ष प्रमाण बंध, द्विस्थानीय बंध-उदय – ये कार्य अंतरकरण के तत्काल बाद प्रारंभ हो गये थे ।

उतरते समय उस काल को प्राप्त करने के अंतर्मुहूर्त पूर्व से ही ये कार्य समाप्त हो गये ।

लोहस्स असंकमणं, छावलितीदेसुदीरणत्तं च ।
णियमेण पडंताणं, मोहस्सणुपुव्विसंकमणं ॥332॥

- अन्वयार्थ - (लोहस्स असंकमणं) लोभ का असंक्रमण, (छावलितीदेसुदीरणत्तं च) छह आवलि व्यतीत होने पर उदीरणा होना और (मोहस्सणुपुव्विसंकमणं) मोह का आनुपूर्वी संक्रमण यह (णियमेण) नियम से (पडंताणं) गिरनेवाले के विपरीत होते है।
- ('विवरीयं पडिहण्णदि' – यह आगे की गाथा का पद यहाँ लेना चाहिए ।) ॥332॥

अवरोहक के होने वाली विशेषताएँ

आरोहक के अंतरकरण करने के बाद से कर्मों के बंध से 6 आवली जाने पर ही उदीरणा का नियम कहा था । वह नियम आरोहक सूक्ष्म-सांपराय के प्रथम समय में ही नष्ट हो जाता है । याने अवरोहक सूक्ष्म-सांपराय के समय से जो समयप्रबद्ध बंधते हैं, उनकी उदीरणा 1 आवली व्यतीत होने पर हो सकती है ।

इसी के संबंध में दूसरा व्याख्यान यह है कि जब मोहनीय का असंख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति-बंध प्रारंभ होता है, तब ही 6 आवली पश्चात् उदीरणा का नियम समाप्त होता है । इसके पूर्व अवरोहक के भी नियम चलता है । परंतु जयधवल में प्रथम व्याख्यान को ही प्रधानता दी है ।

अवरोहक के होने वाली विशेषताएँ

अवतारक अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय से ‘लोभ का असंक्रम’ का नियम भी टूट गया था । तब ही संज्वलन लोभ; मायादिक में संक्रम-योग्य हो गया ।

अवतारक अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय से आनुपूर्वी संक्रमण भी नष्ट हुआ है । अब मोहनीय के द्रव्य का सजातीय बध्यमान में यत्र-तत्र संक्रमण संभव है ।

शेष 4 विशेष कार्य भी नष्ट हो चुके हैं जो श्रेणी चढ़ते समय अंतरकरण के पश्चात् प्रारंभ हुये थे ।

विवरीयं पडिहण्णदि, विरियादीणं च देसघादित्तं ।
तह य असंखेज्जाणं, उदीरणा समयबद्धाणं ॥333॥
लोयाणमसंखेज्जं, समयपबद्धस्स होदि पडिभागो ।
तेत्तियमेत्तद्दव्वस्सुदीरणा वट्टदे तत्तो ॥334॥

- अन्वयार्थ - (च) और (विरियादीणं) वीर्यान्तराय आदिकों का (देसघादित्तं) देशघातित्व (तह य) और वैसे ही (असंखेज्जाणं समयबद्धाणं) असंख्यात समयप्रबद्धों की (उदीरणा) उदीरणा (विवरीयं पडिहण्णदि) विपरीत होकर नष्ट होती है।
- (समयपबद्धस्स) समयप्रबद्ध का (लोयाणमसंखेज्जं) असंख्यात लोकमात्र (पडिभागो) प्रतिभागहार (होदि) होता है
- (तत्तो) इसलिए (तेत्तियमेत्तद्दव्वस्सुदीरणा) उतने मात्र द्रव्य की उदीरणा (वट्टदे) होती है ॥333-334॥

www.JainKosh.org

देशघातिकरण का प्रतिघात

इस प्रकार संख्यात हजार स्थिति-बंध के होने पर क्रम-क्रम से देशघातिकरण भी नष्ट हो जाता है ।

निम्नानुसार क्रम से इन कर्मों का मात्र देशघाति बंध ना होकर सर्वघाती बंध प्रारंभ हो जाता है–

1. वीर्यांतराय	2. मतिज्ञानावरण, उपभोगांतराय	3. चक्षुदर्शनावरणीय
4. श्रुतज्ञानावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय, भोगांतराय	5. अवधिज्ञानावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय, लाभांतराय	6. मन:पर्ययज्ञानावरणीय, दानांतराय

असंख्यात समयप्रबद्ध उदीरणा का घात

इसके पश्चात् हजारों स्थिति-बंध के बीतने पर असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा भी घाती जाती है ।

जो गुणश्रेणि द्रव्य में पल्य/असंख्यात का भागहार उदयावली के लिये था, वह घाता जाता है । अब उदयावली हेतु 'असंख्यात लोक' का भागहार वर्तता है ।

इस कारण एक समयप्रबद्ध का असंख्यातवां भाग ही उदीरणा द्रव्य प्राप्त होगा, असंख्यात समयप्रबद्ध नहीं ।

www.JainKosh.org

तक्काले मोहणियं, तीसीयं वीसियं च वेयणियं ।
मोहं वीसिय तीसिय, वेयणिय कमं हवे तत्तो ॥335॥

- अन्वयार्थ - (तक्काले) उस काल में (मोहणियं तीसियं वीसियं च वेयणियं) मोहनीय, तीसिय, वीसिय और वेदनीय यह क्रम है।
- (तत्तो) उसके पश्चात् (मोहं, वीसिय, तीसिय, वेयणिय) मोहनीय, वीसिय, तीसिय और वेदनीय ऐसा (कमं हवे) क्रम होता है ॥335॥

इससे आगे संख्यात हजार स्थिति-बंध जाने पर क्रमकरण का भी घात होता है ।

वह क्रम-क्रम से इस प्रकार होता है –

असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा के घात के समय स्थिति-बंध

कर्म	बंध	अल्प-बहुत्व
मोहनीय	प/∂^7	स्तोक
3 घातिया	प/∂^6	असंख्यात गुणा
नाम-गोत्र	प/∂^5	असंख्यात गुणा
वेदनीय	प/$\partial^5 \times \frac{3}{2}$	विशेष अधिक

संख्यात हजार स्थिति-बंध बीतने पर

कर्म	बंध	अल्प-बहुत्व
मोहनीय	प/∂^6	स्तोक
नाम-गोत्र	प/∂^5	असंख्यात गुणा
3 घातिया	प/$\partial^5 \times \frac{3}{2}$	असंख्यात गुणा
वेदनीय	प/$\partial^5 \times \frac{3}{2}$ +	विशेष अधिक

air

मोहं वीसिय तीसिय, तो वीसिय मोहतीसियाण कमं ।
वीसिय तीसिय मोहं, अप्पाबहुगं तु अविरुद्धं ॥336॥

- अन्वयार्थ - (मोहं वीसिय तीसिय) मोहनीय, वीसिय, तीसिय
- (तो) उसके अनन्तर (वीसिय मोह तीसियाण) वीसिय, मोहनीय और तीसिय ऐसा (कम) क्रम होता है।
- उसके पश्चात् (वीसिय तीसिय मोहं) वीसिय तीसिय और मोह ऐसा क्रम होता है।
- इनका (अप्पाबहुगं तु) अल्प-बहुत्व (अविरुद्धं) अविरोधरूप से जानना चाहिए ॥336॥

www.JainKosh.org

इसके पश्चात् संख्यात हजार स्थिति-बंध बीतने पर

कर्म	बंध	अल्प-बहुत्व
मोहनीय	प/∂^5	स्तोक
वीसीय	प/∂^4	असंख्यात गुणा
तीसीय	प/$\partial^4 \times \frac{3}{2}$	विशेष अधिक

संख्यात हजारों स्थिति-बंध पश्चात्

कर्म	बंध	अल्प-बहुत्व
वीसीय	प/∂^4	स्तोक
मोहनीय	प/∂^4+	विशेष अधिक
तीसीय	प/∂^4+	विशेष अधिक

संख्यात हजारों स्थिति-बंध पश्चात्

कर्म	बंध	अल्प-बहुत्व
वीसीय	प/∂^3	स्तोक
तीसीय	प/$\partial^3 \times \frac{3}{2}$	विशेष अधिक
मोहनीय	प/$\partial^3 \times 2$	विशेष अधिक

कमकरणविणट्ठादो, उवरिं ठविदा विसेसअहियाओ ।
सव्वासिं तं णट्ठे, हेट्ठा सव्वासु अहियकमं ॥337॥
जत्तो पाये होदि हु, असंखवस्सप्पमाणठिदिबंधो ।
तत्तो पाये अण्णं, ठिदिबंधमसंखगुणियकमं ॥338॥

- अन्वयार्थ- (कमकरणविणट्ठादो उवरिं) क्रमकरण का नाश होने पर (सव्वासिं) सभी कर्मों का (विसेस अहियाओ) स्थिति-बन्ध विशेषाधिक रूप से (ठविदा) रचित है ।
- (तं णट्ठे हेट्ठा) उस क्रमकरण के नाश के पूर्व में (सव्वासु) सर्व स्थिति-बंध (अपने-अपने पूर्व स्थिति-बन्ध से) (अहियकमं) क्रम से अधिक हैं ।
- (जत्तो पाये) जहाँ से (असंखवस्सप्पमाणठिदिबंधो) असंख्यात वर्षप्रमाण स्थितिबन्ध (होदि हु) प्रारम्भ होता है (तत्तो पाये) वहाँ से प्राय: (अण्णं ठिदिबंधं) अन्य स्थिति-बन्ध (असंखगुणियकमं) क्रम से असंख्यातगुणित होता है अर्थात् पूर्व स्थिति-बन्ध से आगे का स्थिति-बन्ध असंख्यातगुणित होता है ॥337-338॥

www.JainKosh.org

स्थिति-बंध कब असंख्यात गुणा होता है?

इस प्रकार क्रमकरण के नाश के समय वीसीय आदि कर्मों का स्थिति-बंध विशेष अधिक है, गुणाकार रूप अधिक नहीं है ।

क्रमकरण नष्ट होने के पूर्व जहाँ से असंख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति-बंध होता है, वहाँ से अगला-अगला स्थिति-बंध असंख्यात गुणा होता है ।

जहाँ तक अंतिम पल्य/असंख्यात बंध हुआ है, वहाँ तक असंख्यात गुणा होता है ।

असंख्यात वर्ष प्रमाण बंध के पहले पूर्व बंध से अगला बंध विशेष अधिक होता है ।

www.JainKosh.org

एवं पल्लासंखं, संखं भागं च होइ बंधेण ।
एत्तो पाये अण्णं, ठिदिबंधो संखगुणियकमं ॥339॥

- अन्वयार्थ - (एवं) इस प्रकार (पल्लासंखं) पल्य का असंख्यातवाँ भाग (च) और (संखं भागं) संख्यातवाँ भाग (बंधेण) बंध की अपेक्षा से (होइ) होता है।
- (एत्तो पाये) यहाँ से (पल्य का संख्यातवाँ भाग स्थितिबन्ध होने पर वहाँ से) (अण्णं ठिदिबंधो) अन्य स्थिति-बंध (संखगुणियकमं) क्रम से संख्यातगुणित होता है ॥339॥

www.JainKosh.org

स्थिति-बंध कब संख्यात गुणा होता है?

इस प्रकार क्रमकरण के नाश के पश्चात् संख्यात हजार स्थिति-बंध बीतने पर अंतिम पल्य/असंख्यात प्रमाण बंध होता है ।

इसके पश्चात् सभी कर्मों का यथायोग्य पल्य/संख्यात प्रमाण स्थिति-बंध होता है ।

आरोहक के जो दूरापकृष्टि प्रमाण बंध होता था, अवरोहक के उसके बिना ही सीधे पल्य/संख्यात प्रमाण बंध हो जाता है । क्योंकि प्रतिपात के परिणामों से तत्संबंधी बंध नहीं पाया जाता ।

पल्य/संख्यात प्रमाण प्रथम बंध से आगे पल्य प्रमाण स्थिति-बंध होने तक पूर्व बंध से अगला बंध संख्यात गुणा होता है ।

वीसीय आदि का अल्प-बहुत्व पूर्ववत् है ।

मोहस्स य ठिदिबंधो, पल्ले जादे तदो दु परिवड्ढी ।
पल्लस्स संखभागं, इगिविगलासण्णिबंधसमं ॥340॥

- अन्वयार्थ - (मोहस्स य ठिदिबंधो) मोह का स्थितिबन्ध (पल्ले जादे) पल्यप्रमाण होता है (तदो दु) तब से स्थितिबन्ध में (पल्लस्स संखभागं) पल्य के संख्यातवें भाग प्रमाण की (परिवड्ढी) वृद्धि होती है।
- पुनः क्रम से (इगिविगलासण्णिबंधसमं) एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय के स्थिति-बंध के समान स्थिति-बंध होता है ॥340॥

मोहनीय का पल्य प्रमाण बंध

इस प्रकार संख्यात हजार स्थिति-बंध के होने पर मोहनीय का स्थिति-बंध पल्योपम प्रमाण होता है । पूर्व बंध से संख्यात बहुभाग प्रमाण वृद्धि होने पर पल्य प्रमाण बंध होता है ।

इस स्थान पर वीसीय, तीसीय का अपने अनुपात में ही बंध बढ़ता है ।

	नाम-2	तीसीय	मोहनीय
नवीन बंध	$\frac{\text{प}}{\text{२}}$	पल्य × $\frac{\text{३}}{\text{४}}$	पल्य
पूर्व बंध	$\frac{\text{प}}{\text{५}}$	$\frac{\text{प}}{\text{५}}$ × $\frac{\text{३}}{\text{२}}$	$\frac{\text{प}}{\text{५}}$ × २

पल्य प्रमाण बंध होने पर स्थिति-बंध में $\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}$ प्रमाण वृद्धि होती है ।

इसके पश्चात् क्रमशः बढ़ते हुये क्रमशः एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, असंज्ञी सदृश स्थिति-बंध होता है ।

www.JainKosh.org

मोहस्स पल्लबंधे, तीसदुगे तत्तिपादमद्धं च ।
दुतिचउसत्तमभागा, वीसतिये एयवियलठिदी ॥341॥

- अन्वयार्थ - (मोहस्स पल्लबंधे) मोहनीय का पल्यप्रमाण स्थिति-बंध होने पर (तीसदुगे) तीसिय और वीसिय का स्थिति-बंध क्रम से (तत्तिपादमद्धं च) उसका तीन चतुर्थांश भाग और आधा भाग होता है।
- उसके पश्चात् (एयवियलठिदी) एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय के स्थितिबन्ध के समान (वीसतिये) वीसिय, तीसिय और चालीसिय का स्थितिबन्ध (दुतिचउसत्तभागा) दो सप्तमांश, तीन सप्तमांश और चार सप्तमांश भागमात्र होता है ॥341॥

www.JainKosh.org

संख्यात हजार स्थिति-बंध बीतने पर स्थिति-बंध

कर्म	एकेंद्रिय समान	द्वीन्द्रिय समान	त्रींद्रिय समान	चतुरिंद्रिय समान	असंज्ञी पंचेंद्रिय समान
मोहनीय	1 सागर × ४/७	25 सागर × ४/७	50 सागर × ४/७	100 सागर × ४/७	1000 सागर × ४/७
तीसिय	1 सागर × ३/७	25 सागर × ३/७	50 सागर × ३/७	100 सागर × ३/७	1000 सागर × ३/७
वीसिय	1 सागर × २/७	25 सागर × २/७	50 सागर × २/७	100 सागर × २/७	1000 सागर × २/७

तत्तो अणियट्टिस्स य, अंतं पत्तो हु तत्थ उदधीणं ।
लक्खपुधत्तं बंधो, से काले पुव्वकरणो हु ॥342॥

- अन्वयार्थ - (तत्तो) उसके पश्चात् (अणियट्टिस्स य) अनिवृत्तिकरण के (अंतं पत्तो) अंत को प्राप्त हुआ (तत्थ) वहाँ (उदधीणं लक्खपुधत्तं) लक्ष पृथक्त्व सागरोपम प्रमाण (बंधो) बंध होता है और (से काले) उसके बाद के काल में (पुव्वकरणो हु) अपूर्वकरण हुआ ॥342॥

www.JainKosh.org

अनिवृत्तिकरण के अंत में स्थिति-बंध

असंज्ञी पंचेन्द्रिय सदृश स्थिति-बंध होने के पश्चात् संख्यात हजार स्थिति-बंध होते हैं ।

ऐसे स्थिति-बंध क्रमशः बढ़ता हुआ अनिवृत्तिकरण का अंतिम समय प्राप्त होता है ।

वहाँ वीसीय आदि का अपने-अपने प्रतिभाग के अनुसार लक्ष पृथक्त्व सागर प्रमाण स्थिति-बंध होता है ।

इसके अनंतर समय में अवरोहक अपूर्वकरणवर्ती हो जाता है ।

www.JainKosh.org

उवसामणा णिधत्ती, णिकाचणुग्घाडिदाणि तत्थेव ।
चदुतीसदुगाणं च य, बंधो दु अधापवत्तो य ॥343॥

- अन्वयार्थ - (तत्थेव) वहीं पर ही अर्थात् अपूर्वकरण के प्रथम समय में (उवसामणा) उपशामना, (णिधत्ति) निधत्ति और (णिकाचण) निकाचना (उग्घाडिदाणि) शुरु हुए।
- (च) और क्रमशः (चदुतीसदुगाणं) चार, तीस, दो प्रकृतियों का (बंधो) बन्ध शुरु हुआ (य) और (अधापवत्तो) अधःप्रवृत्त हुआ ॥343॥

अवरोहक अपूर्वकरण गुणस्थान

अवरोहक अपूर्वकरण के प्रथम समय में अप्रशस्त उपशांतकरण, निधत्तिकरण और निकाचनाकरण एक साथ उद्घाटित हो जाते हैं ।

अवरोहक अपूर्वकरण काल के 7 भाग में से प्रथम भाग में हास्यादि-4 नोकषाय का बंध प्रारंभ हो जाता है ।

द्वितीय भाग में देवगति आदि 30 प्रकृतियों का यथायोग्य बंध होता है ।

अंतिम भाग में निद्रा-प्रचला का बंध प्रारंभ हो जाता है ।

अवरोहक अपूर्वकरण गुणस्थान

प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में स्थिति-बंध बढ़ता-बढ़ता अपूर्वकरण के चरम समय में अपने-अपने प्रतिभाग-अनुसार कोटि लाख पृथक्त्व सागर प्रमाण हो जाता है ।

अपूर्वकरण में पूर्ववत् गलितावशेष आयाम वाली गुणश्रेणि प्रवृत्त हो रही है ।

अपूर्वकरण के अंतिम समय में विशुद्धि की अनंतगुणा हानि होकर अध:प्रवृत्तकरण को प्राप्त होता है ।

पढमो अधापवत्तो, गुणसेढिमवट्ठिदं पुराणादो ।
संखगुणं तच्चंतोमुहुत्तमेत्तं करेदी हु ॥344॥

- अन्वयार्थ - (पढमो अधापवत्तो) प्रथम अधःप्रवृत्त अर्थात् अधःप्रवृत्तकरण के प्रथम समय में (अवट्ठिदं) अवस्थित (गुणसेढीं) गुणश्रेणि (करेदि) करता है ।
- (तच्च) और वह गुणश्रेणि आयाम (पुराणादो) पूर्व के गुणश्रेणि आयाम से (संखगुणं) संख्यातगुणा होकर भी (अंतोमुहुत्तमेत्तं) अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ॥344॥

अध:प्रवृत्तकरण में गुणश्रेणी

अध:प्रवृत्तकरण के प्रथम समय में नवीन गुणश्रेणी बनाता है ।

नवीन गुणश्रेणी का आयाम अवरोहक सूक्ष्म-सांपराय के प्रथम समय में बनायी गुणश्रेणी के आयाम से संख्यात गुणा होता है ।

गुणश्रेणी का अपकृष्ट द्रव्य अपूर्वकरण के अंतिम समय के अपकृष्ट द्रव्य से असंख्यात गुणा हीन होता है ।

विशुद्धि की हानि से अपकृष्ट द्रव्य हीन तथा आयाम संख्यात गुणा होता है ।

यह गुणश्रेणि संयम निमित्तक है । इसके पूर्व की गुणश्रेणि; श्रेणी के परिणाम निमित्तक थी ।

यह नवीन गुणश्रेणि अवस्थित आयाम वाली है ।

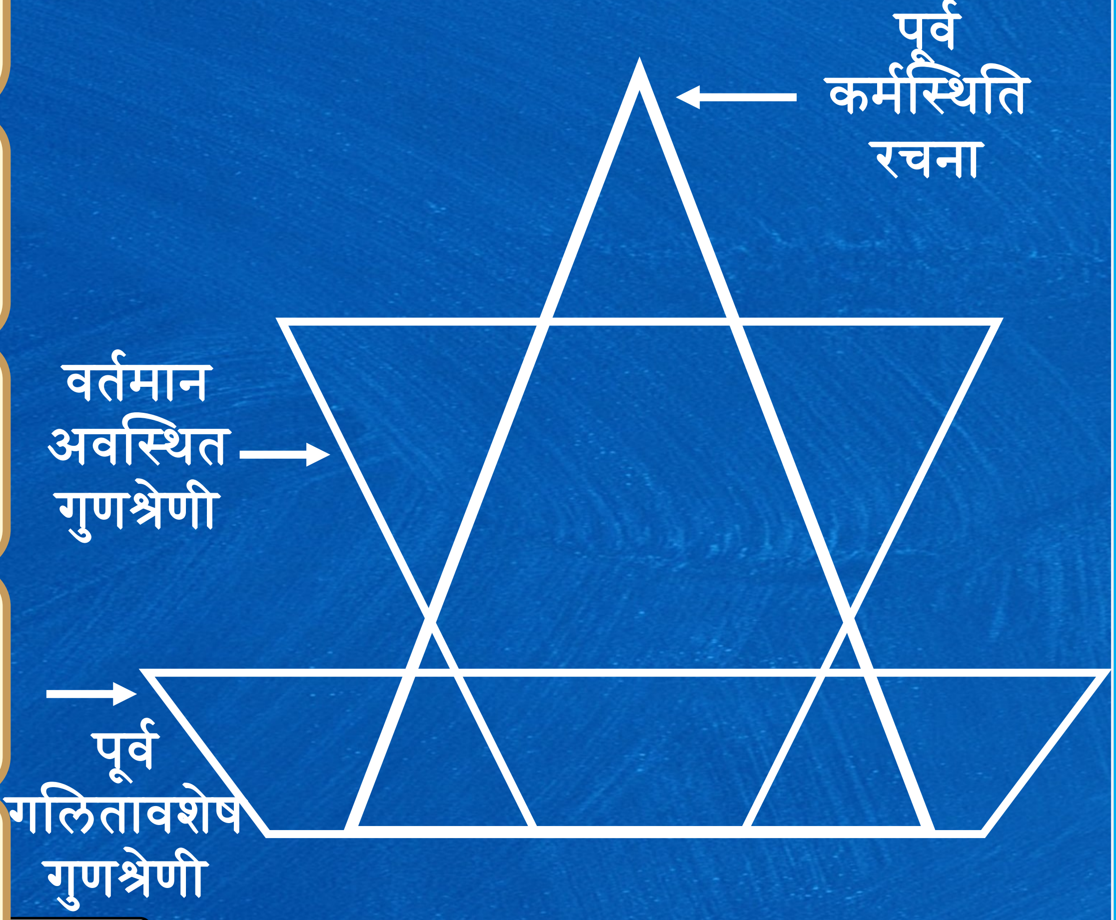

ओदरसुहुमादीदो, अपुव्वचरिमो त्ति गलिदसेसेव ।
गुणसेढीणिक्खेवो, सट्ठाणे होदि तिट्ठाणं ॥345॥

- अन्वयार्थ-(ओदरसुहुमादीदो अपुव्वचरिमो त्ति) उतरने वाले सूक्ष्म-सांपराय के प्रथम समय से अपूर्वकरण के अंतिम समय तक (गुणश्रेणि आयाम) (गलिदसेसेव) गलितावशेष ही है।
- (सट्ठाणे) स्वस्थान अप्रमत्त में (तिट्ठाणं) तीन स्थानरूप अर्थात् वृद्धि, हानि और अवस्थित रूप (गुणसेढी णिक्खेवो) गुणश्रेणि निक्षेप (और आयाम) (होदि) होता है ॥345॥

www.JainKosh.org

मोहनीय की गुणश्रेणियाँ

अवरोहक सूक्ष्म-सांपराय से अपूर्वकरण पर्यंत ज्ञानावरणादि 6 कर्मों की गुणश्रेणि गलितावशेष रूप ही प्रवृत्त होती है ।

मोहनीय की गुणश्रेणी अवस्थित आयाम वाली होकर, कभी गलितावशेष रूप होती है ।

काल	गुणश्रेणी का आयाम
सूक्ष्म-सांपराय के काल में	सर्वत्र अवस्थित
बादर लोभ के प्रथम समय	वृद्धि
बादर लोभ के द्वितीयादि समय	सर्वत्र अवस्थित
मायावेदक के प्रथम समय	वृद्धि
मायावेदक के द्वितीयादि समय	सर्वत्र अवस्थित
मानवेदक के प्रथम समय	वृद्धि
मानवेदक के द्वितीयादि समय	सर्वत्र अवस्थित
क्रोधवेदक के प्रथम समय	वृद्धि
क्रोधवेदक के द्वितीयादि समय से अपूर्वकरण के अंत तक	गलितावशेष प्रमाण
अध:प्रवृत्त के प्रथम समय	वृद्धि
अध:प्रवृत्त के द्वितीयादि समय	सर्वत्र अवस्थित

स्वस्थान अप्रमत्त संयत

अधःप्रवृत्त के अंतर्मुहूर्त काल तक विशुद्धि की प्रतिसमय हानि होती है ।

तदनंतर स्वस्थान अप्रमत्तसंयत होता है ।

वहाँ संक्लेश, विशुद्धि के वश से वृद्धि, हानि या अवस्थित आयाम वाला गुणश्रेणी आयाम होता है ।

सट्ठाणे तावदियं, संखगुणूणं तु उवरि चडमाणे ।
विरदाविरदाहिमुहे, संखेज्जगुणं तदो तिविहं ॥346॥

- अन्वयार्थ - (सट्ठाणे) स्वस्थान में (गुणश्रेणि आयाम) (तावदियं) उतना ही रहता है ।
- (तु उवरि चडमाणे) ऊपर चढ़ने पर वह (संखगुणूणं) संख्यातगुणा हीन होता है और
- (विरदाविरदाहिमुहे) विरताविरत अर्थात् देशसंयत के सम्मुख होने पर (संखेज्जगुणं) संख्यातगुणा होता है।
- (तदो) इसलिए (स्वस्थान अप्रमत्त में गुणश्रेणि आयाम) (तिविहं) तीन प्रकार का है ॥346॥

3 प्रकार का गुणश्रेणी-आयाम

यदि प्रमत्त-अप्रमत्त गुणस्थान में स्वस्थान संयत रहता है तो गुणश्रेणी का आयाम अवस्थित रहता है । इसका प्रमाण पूर्ववत् ही रहता है ।

यदि प्रमत्तसंयत से देशसंयम को प्राप्त होता है, तो गुणश्रेणी का आयाम संख्यात गुणा हो जाता है क्योंकि प्रमत्तसंयत की विशुद्धि से संयमासंयम की विशुद्धि अनंतगुणाहीन है ।

यदि प्रमत्तसंयत से पुनः उपशम या क्षपक श्रेणी आरोहण करता है, तो अपूर्वकरण गुणस्थान में संख्यात गुणाहीन आयाम वाली गुणश्रेणी करता है ।

द्रव्य की अपेक्षा अवरोहक प्रतिसमय असंख्यात गुणाहीन द्रव्य अपकृष्ट करता है । स्वस्थान अप्रमत्त होने पर विशुद्धि और संक्लेश के निमित्त से अपकृष्ट द्रव्य घटता, बढ़ता या अवस्थित रहता है ।

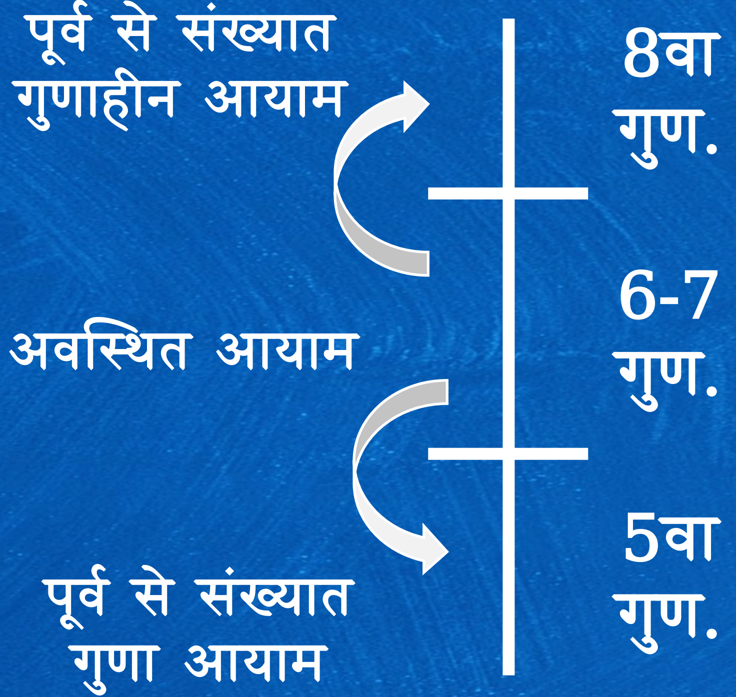

करणे अधापवत्ते, अधापवत्तो दु संकमो जादो ।
विज्झादमबंधाणं, णट्ठो गुणसंकमो तत्थ ॥347॥

- अन्वयार्थ - (अधापवत्ते करणे) अधःप्रवृत्तकरण में (अधापवत्तो दु संकमो) अधःप्रवृत्त संक्रम (जादो) होता है। (अबंधाणं) न बाँधी जाने वाली प्रकृतियों का (विज्झादं) विध्यात संक्रम होता है । (तत्थ) वहाँ (गुणसंकमो) गुणसंक्रमण (णट्ठो) नष्ट हुआ ॥347॥

संक्रमण

अध:प्रवृत्तकरण में प्रवेश करते ही गुणसंक्रम की व्युच्छित्ति हो जाती है । इसके पूर्व अपूर्वकरण तक वह प्रवृत्त रहा था ।

अध:प्रवृत्तकरण से बध्यमान प्रकृतियों का अध:प्रवृत्त संक्रमण होता है । अबंध प्रकृतियों का विध्यात संक्रमण होता है ।

काल	प्रकृति	संक्रमण
अवतारक सूक्ष्म-सांपराय से अवतारक अपूर्वकरण	गुणसंक्रमयोग्य प्रकृतियाँ	गुणसंक्रमण
अवतारक अध:प्रवृत्तकरण से अप्रमत्त-प्रमत्तसंयत	बध्यमान	अध:प्रवृत्त
	अबध्यमान (व्युच्छिन्न)	विध्यात

चडणोदरकालादो, पुव्वादो पुव्वगो त्ति संखगुणं ।
कालं अधापवत्तं, पालदि सो उवसमं सम्मं ॥348॥

- अन्वयार्थ - (पुव्वादो पुव्वगो त्ति चडणोदरकालादो) अपूर्वकरण से अपूर्वकरण पर्यन्त चढ़ने व उतरने के काल से (संखगुणं कालं) संख्यातगुणा काल (सो) वह जीव (अधापवत्तं) अधःप्रवृत्त सहित (उवसमं सम्मं) उपशम सम्यक्त्व का (पालदि) पालन करता है ॥348॥

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल

उपशम श्रेणी आरोहक के अपूर्वकरण से लेकर

उतरते हुए अपूर्वकरण के अंतिम समय तक जो काल है,

उससे संख्यात गुणा काल अध:प्रवृत्तकरण सहित द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल है ।

तस्सम्मत्तद्धाए, असंजमं देससंजमं वापि ।
गच्छेज्जावलिछक्के, सेसे सासणगुणं वापि ॥349॥

- अन्वयार्थ - (तस्सम्मत्तद्धाए) उस द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के काल में वह जीव (असंजमं देससंजमं वापि) असंयम अथवा देशसंयम को (गच्छेज्ज) प्राप्त हो सकता है
- (वा) अथवा (आवलिछक्के सेसे) छह आवलि शेष रहने पर (सासणगुणं अपि) सासादन गुणस्थान को भी प्राप्त हो सकता है ॥349॥

www.JainKosh.org

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से संयमासंयम, असंयम

6th ⇨ 5th
6th ⇨ 4th
6th ⇨ 5th ⇨ 4th
6th ⇨ 4th ⇨ 5th

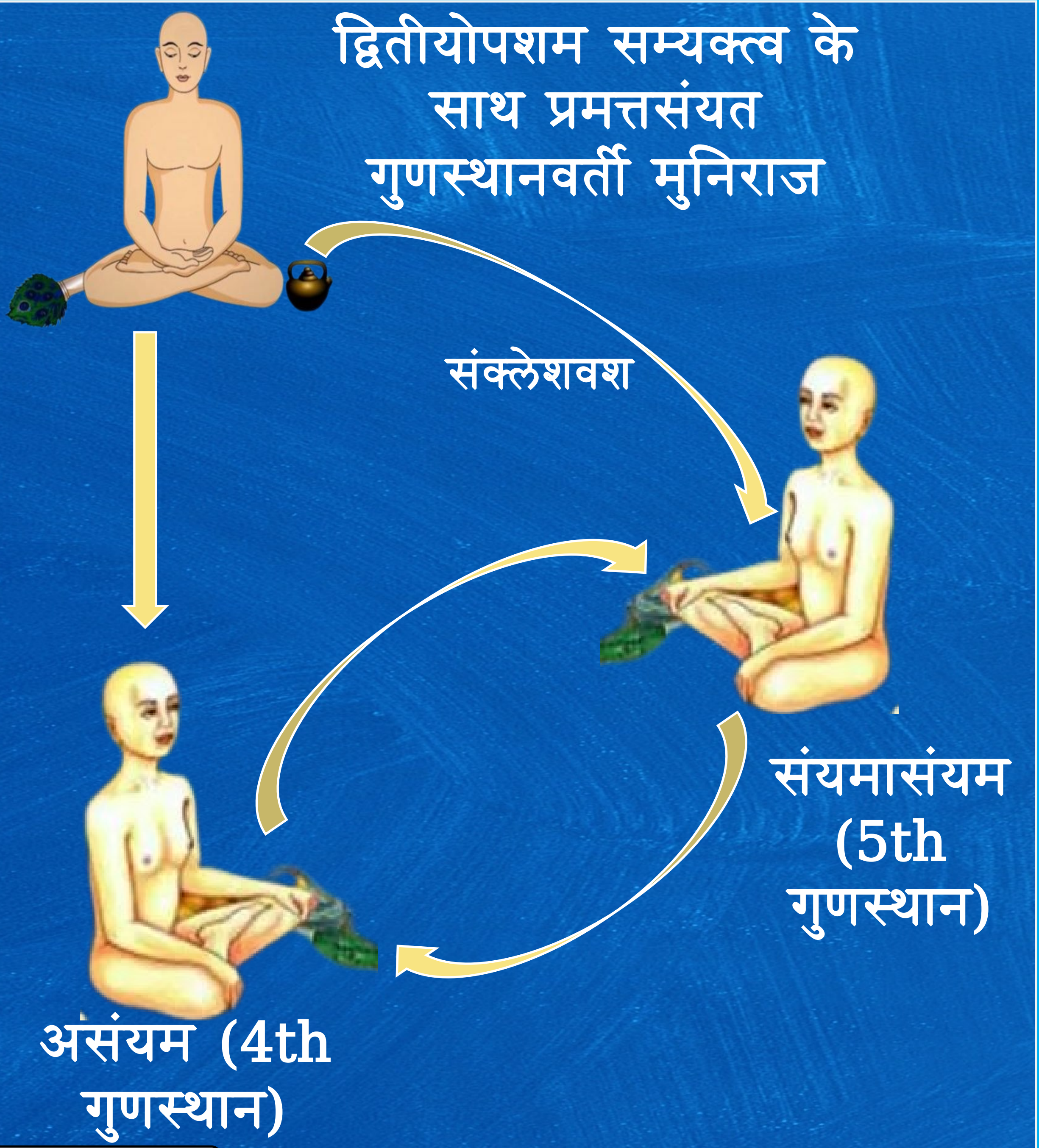

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से सासादन

उपशम सम्यक्त्व का काल 6 आवली शेष रहने पर

अनंतानुबंधी-4 में से किसी एक का उदय होने पर

सासादन गुणस्थान को भी प्राप्त हो जाता है ।

जदि मरदि सासणो सो, णिरयतिरिक्खं णरं ण गच्छेदि । णियमा देवं गच्छदि, जइवसहमुणिंदवयणेण ॥350॥

- अन्वयार्थ - (सो सासणो) उपशमश्रेणि से उतरा हुआ वह सासादन जीव (जदि मरदि) यदि मरता है तो (णिरियतिरिक्खं णरं) नरक, तिर्यञ्च और मनुष्यगति को (ण गच्छेदि) प्राप्त नहीं होता है । (णियमा) नियम से (देवं गच्छदि) देवगति को प्राप्त होता है – ऐसा (जइवसहमुणिंद-वयणेण) यतिवृषभ मुनीन्द्र के वचन की अपेक्षा से कहा गया है ॥350॥

सासादन गुणस्थानवर्ती का मरण होने पर

यदि यह सासादन गुणस्थानवर्ती जीव मरण हो प्राप्त होता है, तो देवगति में ही जन्मता है, नरकादि शेष 3 गतियों में नहीं । क्योंकि द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी के यदि आयु बध्यमान है, तो वह देवायु ही हो सकती है ।

यह द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से सासादन की प्राप्ति तथा मरण का विशेष; आचार्य यतिवृषभ के व्याख्यान के अनुसार किया है । (जयधवल 13/100)

प्रश्न- द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी ने अनंतानुबंधी कषाय की विसंयोजना कर दी थी । तब उसके अनंतानुबंधी के उदय कैसे हो सकता है, जिससे कि सासादन गुणस्थान बन जाये?

उत्तर- इस व्याख्यान के अनुसार अप्रत्याख्यान आदि कषायों का द्रव्य अनंतानुबंधी में संक्रमित करके तत्काल उदय में लाकर सासादन बन सकता है ।

www.JainKosh.org

णिरयतिरिक्खणराउग-सत्तो सक्को ण मोहमुवसमिदुं ।
तम्हा तिसु वि गदीसु य, ण तस्स उप्पज्जणं होदि ॥351॥

- अन्वयार्थ- (णिरयतिरिक्खणराउगसत्तो) नरक, तिर्यंच और मनुष्यायु का (बध्यमान मनुष्यायु का) सत्त्ववाला जीव (मोहमुवसमिदुं) मोह का उपशमन (ण सक्को) नहीं कर सकता ।
- (तम्हा) इसलिए (तस्स) उसका (तिसु वि गदिसु) तीनों गतियों में (उप्पज्जणं ण होदि) उत्पाद (जन्म) नहीं होता है ॥351॥

देवगति में ही जन्म का नियम कैसे?

जो मोह की उपशमना कर रहा है, उसके बध्यमान नरक, तिर्यंच, मनुष्य आयु का सत्त्व ही नहीं है ।

यदि 3 इन आयु में से किसी का सत्त्व है, तो वह जीव देशसंयम ही प्राप्त नहीं कर सकता ।

इसलिये उपशम श्रेणी से पतित सासादन जीव के मरण होने पर 3 गतियों में जन्म नहीं होता ।

यदि पूर्व में आयु बांधी ही नहीं है, तो सासादन में मरण नहीं है क्योंकि अबद्धायुष्क का मरण नहीं होता ।

www.JainKosh.org

उवसमसेढीदो पुण, ओदिण्णो सासणं ण पाउणदि ।
भूदबलिणाहणिम्मल-सुत्तस्स फुडोवदेसेण ॥352॥

- अन्वयार्थ - (पुण) पुनः (भूदबलिणाहणिम्मलसुत्तस्स) भूतबलि स्वामी के निर्मलसूत्र के (फुडोवदेसेण) स्पष्ट उपदेश से (उवसमसेढीदो ओदिण्णो) उपशमश्रेणि से उतरनेवाला जीव (सासणं) सासादन गुणस्थान को (ण पाउणदि) प्राप्त नहीं होता है। ॥352॥

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से सासादन नहीं होता

आचार्य भूतबलि स्वामी के अनुसार द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से सासादन की प्राप्ति नहीं होती । क्योंकि उपशम श्रेणी चढ़ने के पूर्व ही अनंतानुबंधी कषाय की विसंयोजना कर दी है । ऐसी स्थिति में अनंतानुबंधी के सत्त्व के अभाव में सासादन कैसे बनेगा ?

कोई कहे कि प्रथम समय में अनंतानुबंधी का बंध किया है, उसका उदय आ जायेगा ?

तो वह भी संभव नहीं है क्योंकि एक आवली काल अचलावली का होता है । तब बद्ध कर्म का उदय संभव नहीं है ।

www.JainKosh.org

प्रश्न- अप्रत्याख्यान आदि कषायों का अनंतानुबंधी में संक्रमण करके उदय आयेगा ?

उत्तर- संक्रमण होने पर भी कर्म 1 आवली तक तदवस्थ रहते हैं ।

इसलिये वे संक्रमित भी अनंतानुबंधी का उदय लाने में अशक्य हैं ।

उदयावली के निषेकों में अनंतानुबंधी का अभाव है, जिससे वहाँ भी अप्रत्याख्यान आदि का द्रव्य संक्रमित नहीं हो सकता ।

इत्यादि कारणों से भूतबलि आचार्य के अनुसार उपशम श्रेणी से उतरकर सासादन की प्राप्ति नहीं होती ।

www.JainKosh.org

पुंकोधोदयचलियस्सेसाह परूवणा हु पुंमाणे ।
मायालोभे चलिदस्सत्थि विसेसं तु पत्तेयं ॥353॥

- अन्वयार्थ - (पुंकोधोदयचलियस्स) पुरुषवेद और क्रोध कषाय के उदय से चढ़ने वाले की (एसा परूवणा हु) यह (पूर्वोक्त सब) प्ररूपणा (आह) कही है।
- (पुंमाणे मायालोभे चलिदस्स) पुरुषवेद और मानकषाय उसीप्रकार माया और लोभकषाय से चढ़नेवाले (पत्तेयं तु) प्रत्येक का (विसेसं अत्थि) विशेष है ॥353॥

भिन्न कषायोदय से श्रेणी पर आरोहण

पूर्वोक्त सारी प्ररूपणा पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध के उदय से श्रेणी पर आरूढ़ जीव की अपेक्षा कही है । यह एक प्रकार है ।

इसी प्रकार पुरुषवेद के साथ संज्वलन मान, माया या लोभ के उदय से श्रेणी चढ़ने पर 3 प्रकार और होते हैं ।

ऐसे ही स्त्रीवेद और 4 संज्वलन के उदय से श्रेणी आरोहण के 4 प्रकार के जीव हैं ।

इसी प्रकार नपुंसकवेद और 4 संज्वलन के उदय से श्रेणी आरोहण करने वाले 4 प्रकार के जीव हैं ।

इस तरह कुल 12 प्रकार हुए ।

12 प्रकार से श्रेणी आरोहण

पुरुषवेदी मुनिराज स्त्रीवेदी मुनिराज नपुंसकवेदी मुनिराज

www.JainKosh.org

दोण्हं तिण्हं चउण्हं, कोहादीणं तु पढमठिदिमेत्तं ।
माणस्स य मायाए, बादरलोहस्स पढमठिदी ॥354॥

- अन्वयार्थ - (कोहादीणं दोण्हं पढमठिदिमेत्तं) क्रोधादिक दो कषायों की जितनी प्रथम स्थिति है उतनी (माणस्स) एक मान कषाय की (पढमठिदी) प्रथम स्थिति होती है।
- (कोहादीणं तिण्हं तु पढमठिदिमेत्तं) क्रोधादिक तीन कषायों की प्रथम स्थितिप्रमाण (मायाए पढमठिदि) एक माया कषाय की प्रथम स्थिति होती है (य) और
- (कोहादीणं चउण्हं पढमठिदिमेत्तं) क्रोधादिक चार कषायों की प्रथम स्थितिप्रमाण (बादरलोहस्स) बादरलोभ की (पढमठिदी) प्रथम स्थिति होती है ॥354॥

भिन्न कषाय से आरूढ़ के कषाय की प्रथम स्थिति

संज्वलन क्रोध के उदय से श्रेणी पर आरूढ़ जीव के जितनी क्रोध और मान की प्रथम स्थिति है, संज्वलन मान के उदय से श्रेणी-आरूढ़ जीव उतनी मान की प्रथम स्थिति बनाता है । वह क्रोध की प्रथम स्थिति अन्य अनुदय प्रकृति की भांति एक आवली मात्र रखता है ।

इसी प्रकार संज्वलन क्रोध के उदय से श्रेणी-आरूढ़ जीव के जितनी क्रोध, मान, माया की प्रथम स्थिति है, संज्वलन माया के उदय से श्रेणी-आरूढ़ जीव के उतनी माया की प्रथम स्थिति होती है । वह क्रोध, मान की प्रथम स्थिति एक आवली मात्र रखता है ।

भिन्न कषाय से आरूढ़ के कषाय की प्रथम स्थिति

संज्वलन क्रोध के उदय से श्रेणी आरूढ़ जीव के जितनी क्रोध, मान, माया, बादर लोभ की प्रथम स्थिति होती है, संज्वलन लोभ के उदय से श्रेणी-आरूढ़ जीव उतनी संज्वलन बादर लोभ की प्रथम स्थिति बनाता है ।

संज्वलन क्रोध, मान, माया की प्रथम स्थिति एक आवली मात्र रखता है ।

भिन्न कषाय से आरूढ़ के कषाय की प्रथम स्थिति

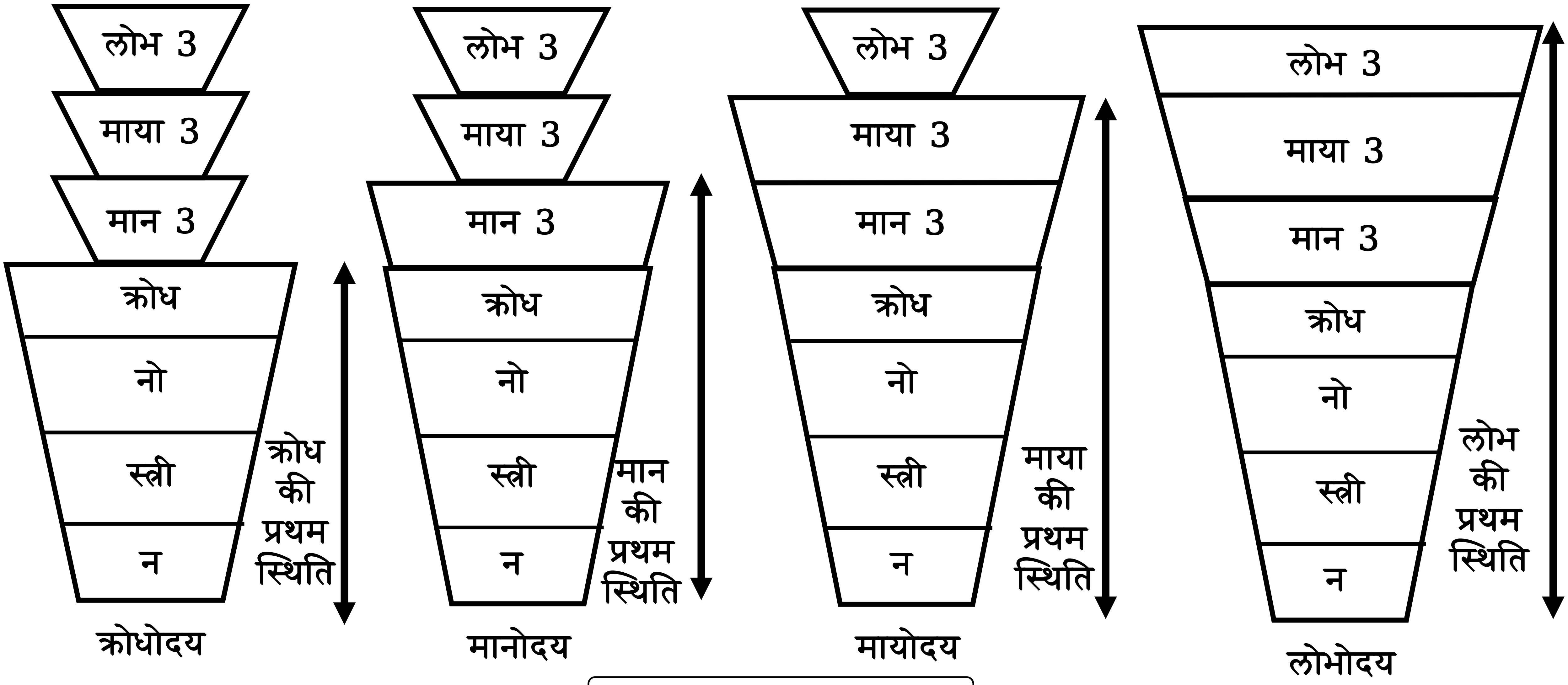

www.JainKosh.org

इन चारों ही प्रकार में सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति समान ही रहती है ।

चारों के नपुंसकवेद, स्त्रीवेद और 7 नोकषाय के उपशमन का काल भी समान ही रहता है ।

जिस कषाय के उदय से श्रेणी आरूढ़ होता है, उससे पूर्व की कषाय का उदय श्रेणी के दौरान नहीं आता है । जैसे मान के उदय से श्रेणी आरोहण किया, तो मान के पूर्व की क्रोध कषाय का उदय श्रेणी पर नहीं आयेगा । इसलिये उस पूर्व कषाय की प्रथम स्थिति भी नहीं बनायी जाती है ।

बिना प्रथम स्थिति बनाए ही स्वस्थान में उस कषाय के द्रव्य का उपशमन किया जाता है ।

जस्सुदयेणारूढो, सेढीं तस्सेव ठवदि पढमठिदिं ।
सेसाणावलिमेत्तं, मोत्तूण करेदि अंतरं णियमा ॥355॥

- अन्वयार्थ - (जस्सुदयेण सेढीं आरूढो) जिस कषाय अथवा वेद के उदय से श्रेणि चढ़ता है (तस्सेव) उसकी ही (पढमठिदिं) प्रथम स्थिति (ठवदि) स्थापित करता है।
- (सेसाण) शेष (अनुदयरुप) प्रकृतियों की (णियमा) नियम से (आवलिमेत्तं मोत्तूण) आवलि मात्र स्थिति छोड़कर (अंतरं करेदि) अंतर करता है ॥355॥

प्रथम स्थिति के नियम

जिस वेद और कषाय के उदय से श्रेणी आरोहण करता है, उस वेद और कषाय की ही प्रथम स्थिति स्थापित करता है ।

शेष वेद और कषाय की प्रथम स्थिति एक आवली मात्र रखकर शेष का अंतर करता है ।

जस्सुदयेणारूढो, सेढिं तक्कालपरिसमत्तीए ।
पढमट्ठिदिं करेदि हु, अणंतरुवरुदयमोहस्स ॥356॥

- अन्वयार्थ - (जस्सुदयेण) जिसके उदय से (सेढिं आरूढो) श्रेणि चढ़ा (तक्काल-परिसमत्तीए) उसका काल समाप्त होने पर (अणंतरुवरुदयमोहस्स) उसके अनन्तर ऊपर की उदयरूप मोह की (पढमट्ठिदिं) प्रथम स्थिति (करेदि हु) करता है ॥356॥

www.JainKosh.org

प्रथम स्थिति समाप्त होने पर किसकी प्रथम स्थिति?

जिस कषाय के उदय से श्रेणी आरोहण करता है, उसकी प्रथम स्थिति समाप्त होने पर अनंतर कषाय की प्रथम स्थिति करता है । पूर्व कषाय की प्रथम स्थिति नहीं बनाता है ।

जैसे संज्वलन क्रोध के उदय से श्रेणी आरूढ़ होने वाला जीव संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति समाप्त होने पर संज्वलन मान की प्रथम स्थिति करता है ।

मानोदय से श्रेणी आरोहक जीव मान की प्रथम स्थिति समाप्त होने पर संज्वलन माया की प्रथम स्थिति करता है ।

मायोदय से श्रेणी आरोहक जीव माया की प्रथम स्थिति समाप्त होने पर संज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति करता है ।

लोभोदय से श्रेणी आरोहक जीव लोभ की प्रथम स्थिति समाप्त होने पर सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति करता है ।

www.JainKosh.org

माणोदएण चडिदो, कोहं उवसमदि कोह अद्धाए ।
मायोदएण चडिदो, कोहं माणं सगद्धाए ॥357॥

- अन्वयार्थ- (माणोदएण चडिदो) मान के उदय से चढ़ा हुआ जीव (कोहअद्धाए) क्रोध के काल में (कोहं) क्रोध का (उवसमदि) उपशमन करता है ।
- (मायोदएण चडिदो) माया के उदय से श्रेणि चढ़ा हुआ जीव (सगद्धाए) अपने-अपने काल में (कोहं माणं) क्रोध और मान का उपशमन करता है, अर्थात् क्रोध के काल में क्रोध का और मान के काल में मान का उपशमन करता है ॥357॥

लोभोदएण चडिदो, कोहं माणं च मायमुवसमदि ।
अप्पप्पण अद्धाणे, ताणं पढमट्ठिदी णत्थि ॥358॥

- अन्वयार्थ - (लोभोदएण चडिदो) लोभ के उदय से चढ़ा हुआ जीव (कोहं माणं मायं च) क्रोध, मान और माया का (अप्पप्पण अद्धाणे) अपने-अपने काल में (उवसमदि) उपशम करता है। (ताणं) उनकी (पढमट्ठिदी) प्रथम स्थिति (णत्थि) नहीं होती है ॥358॥

क्रोध आदि कषायों के द्रव्य का उपशमन

जिस भी कषाय के उदय से श्रेणी आरोहण हुआ हो, तदपि क्रोध आदि कषायों के द्रव्य का उपशमन अपने-अपने काल में ही होता है ।

यथा मानोदय से श्रेणी आरोहक के 3 क्रोध द्रव्य का उपशमन क्रोध के उपशमन के काल में ही होता है ।

मायोदय से श्रेणी आरोहक के स्व-स्व काल में क्रमशः 3 क्रोध का, तदनंतर 3 मान का उपशमन होता है ।

लोभोदय से श्रेणी आरोहक के 3 क्रोध, 3 मान, 3 माया के द्रव्य का उपशमन क्रमशः स्व-स्व काल में ही होता है ।

जिस कषाय के उदय से श्रेणी आरोहण किया है, उसके पूर्व की कषाय की प्रथम स्थिति नहीं बनायी जाती । तात्कालिक कषाय के उदय में ही पूर्व कषाय के द्रव्य का उपशमन कर लिया जाता है ।

माणोदयचडपडिदो, कोहोदयमाणमेत्तमाणुदओ ।
माणतियाणं सेसे, सेससमं कुणदि गुणसेढिं ॥359॥
माणादितियाणुदये, चडपडिये सगसगुदयसंपत्ते ।
णवछत्तिकसायाणं, गलिदवसेसं करेदि गुणसेढिं ॥360॥

- अन्वयार्थ- (माणोदयचडपडिदो) मान के उदय से श्रेणि चढ़कर गिरे हुए जीव का (कोहोदयमाणमेत्तमाणुदओ) क्रोध और मान के उदयकाल प्रमाण मान का उदयकाल है।
- (माणतियाणं) तीन मान की (सेससमं) शेष कर्म समान (सेसे गुणसेढिं) गलितावशेष गुणश्रेणि (कुणदि) करता है ।
- (माणादितियाणुदये चडपडिये) मानादि तीन कषायों के उदय से श्रेणि चढ़कर गिरने पर (सगसगुदयसंपत्ते) अपनी-अपनी कषायों का उदय प्राप्त होने पर क्रम से (णवछत्तिकसायाणं) नौ, छह, तीन कषायों की (गलिदवसेसं गुणसेढिं) गलितावशेष गुणश्रेणि (करेदि) करता है ॥359-360॥

www.JainKosh.org

अवरोहक के कषाय-उदय काल

भिन्न कषायोदय से चढ़ते समय जो विशेषता थी, वह बतायी ।
अब ऐसे ही जीव के उतरते समय जो विशेषता रहती है, वह कहते हैं ।

किस कषायोदय से श्रेणी आरूढ़	उतरते हुए अब कौन-सी कषाय का उदय	इस कषाय का उदयकाल कितना ?	तब कितने मोहनीय कर्म की गलितावशेष गुणश्रेणी ?
		(क्रोधोदय से चढ़कर, उतरने वाले के इतने काल प्रमाण)	
मान	मान	क्रोध, मान जितना	9 (3 मान, 3 माया, 3 लोभ)
माया	माया	क्रोध, मान, माया जितना	6 (3 माया, 3 लोभ)
लोभ	लोभ	क्रोधादि चारों जितना	3 (3 लोभ)

जिस कषायोदय से श्रेणी चढ़ा था, उतरते समय उसी कषाय का उदयकाल प्रारंभ होने पर गलितावशेष गुणश्रेणी बनाना प्रारंभ करता है । इसके पूर्व तक मोह की अवस्थित आयाम वाली गुणश्रेणी बनाता है ।

इस गलितावशेष गुणश्रेणी का आयाम ज्ञानावरणादि शेष कर्मों की गुणश्रेणी प्रमाण होता है ।

जस्सुदएण य चडिदो, तम्हि य ओक्कट्टियम्हि पडिऊण।
अंतरमाऊरेदि हु, एवं पुरीसोदए चडिदो ॥361॥

- अन्वयार्थ - (जस्सुदएण य चडिदो) जिस कषाय के उदय से श्रेणि चढ़ा है (पडिऊण) गिरकर (तम्हि य ओक्कट्टियम्हि) उस कषाय का अपकर्षण होने पर (अंतरमाऊरेदि हु) अंतर भरता है
- (एवं) इस प्रकार (पुरिसोदए) पुरुषवेद के उदय से (चडिदो) चढ़े हुए जीव का विधान कहा है ॥361॥

www.JainKosh.org

अवरोहक के अंतरपूरण

जिस कषायोदय से श्रेणी चढ़ता है, उतरते समय उसी कषाय का उदय होने पर अंतर भरता है। उसके पूर्व तक अंतरायाम बना रहता है।

जैसे मानोदय से श्रेणी चढ़कर, उतरने वाले के जब मान का उदय प्रारंभ होता है, उस ही समय मानादि कषायों का अंतर भर देता है।

परंतु अभी भी क्रोध का द्रव्य उपशांत होने से उनका अपकर्षण नहीं करता है।

जितना क्रोधोदय से श्रेणी चढ़कर उतरने वाले के मान का वेदककाल है, उतना काल यहाँ बीतने पर क्रोध का द्रव्य भी अनुपशांत हो जाता है। तब उनका भी अपकर्षण करके उदयादि बाह्य गुणश्रेणी करता है।

भिन्न कषायोदय से अवरोहक की विशेषता

क्रोध का उदय होने पर:
1) गलितावशेष गुणश्रेणी
2) 12 कषायों का अंतर पूरण

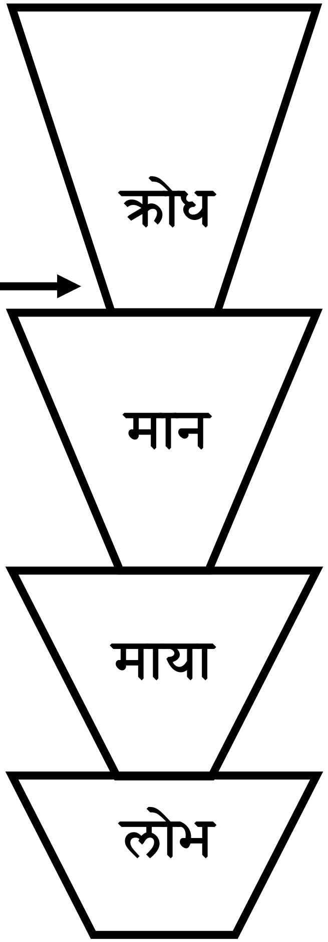

क्रोधोदय से अवरोहक

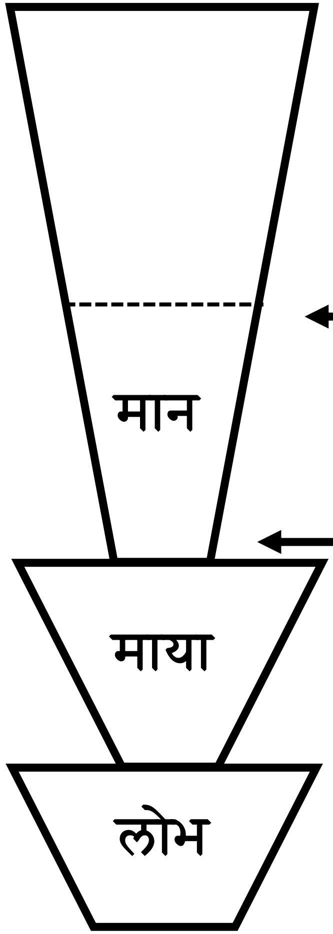

मानोदय से अवरोहक

इस स्थान पर 3 क्रोध की भी गलितावशेष गुणश्रेणी प्रारंभ

मान का उदय होने पर –
1) गलितावशेष गुणश्रेणी
2) 9 कषायों का अंतर पूरण

इसी प्रकार माया, लोभ से उतरने वाले के भी जानना ।

भिन्न कषायोदय से श्रेणी में विशेषता

आरोहक की विशेषता

1) जिस कषायोदय से श्रेणी आरोहण किया है, अंतरकरण करते समय उसी की अंतर्मुहूर्त प्रमाण प्रथम स्थिति बनायी जाती है । शेष की एक आवली मात्र प्रथम स्थिति स्थापित की जाती है ।

2) प्रथम स्थिति समाप्त होने पर अगली कषाय का उदय होता है, पूर्व कषाय का उदय नहीं होता ।

अवरोहक की विशेषता

1) कषाय का उदयकाल

2) गलितावशेष गुणश्रेणी बनाने का काल

3) अंतर पूरने का काल

..nKosh.org

थीउदयस्स वि एवं, अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे ।
सममुवसामदि संढस्सुदए चडिदस्स वोच्छामि ॥362॥

- अन्वयार्थ - (थीउदयस्स वि एवं) स्त्रीवेद के उदय से चढ़े हुए का भी विधान इसीप्रकार है। विशेष यह है कि (अवगदवेदो हु) अपगतवेदी अर्थात् वेद के उदय से रहित होकर (सत्तकम्मंसे) सात नोकषायों को (सममुवसामदि) एक समय में ही उपशमित करता है।
- (संढस्सुदए) नपुंसकवेद के उदय से (चडिदस्स) चढ़े हुए जीव का (वोच्छामि) आगे मैं व्याख्यान करता हूँ ॥362॥

स्त्रीवेदोदय से श्रेणी आरोहण में विशेषता

स्त्रीवेद के उदय के साथ क्रोधादि कषायों के उदय से श्रेणी आरूढ़ जीव के पुरुषवेद के समान ही वर्णन है । इतना विशेष है कि –

1. अंतरकरण के समय जब स्त्रीवेद का अंतर करता है, तब स्त्रीवेद की प्रथम स्थिति (नपुंसक वेद + स्त्रीवेद का उपशमन काल) प्रमाण स्थापित करता है ।
2. स्त्रीवेद का उपशमन होते ही अपगतवेदी हो जाता है ।
3. अपगतवेदी होने पर पुरुषवेद का बंध भी व्युच्छिन्न हो जाता है ।
4. अपगतवेदी होकर 7 नोकषायों का युगपत् उपशमन पूर्ण करता है, किसी नवक समयप्रबद्ध का अलग से उपशमक करने की आवश्यकता नहीं होती ।

www.JainKosh.org

संढुदयंतरकरणो, संढद्धाणम्हि अणुवसंतंसे ।
इत्थिस्स य अद्धाए, संढं इत्थिं च समगमुवसमदि ॥363॥

- अन्वयार्थ- (संढुदयंतरकरणो) नपुंसकवेद के उदय से श्रेणि चढ़नेवाला अंतरकरण किया हुआ जीव (संढद्धाणम्हि) नंपुसकवेद के उपशमनकाल में (अणुवसंतंसे) नपुंसकवेद पूर्णरूप से उपशान्त न होने से (इत्थिस्स य अद्धाए) स्त्रीवेद के उपशमन काल में (संढं इत्थिं च) नपुंसकवेद और स्त्रीवेद का (समगमुवसमदि) एक साथ उपशमन करता है ॥363॥

www.JainKosh.org

ताहे चरिमसवेदो, अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे ।
सममुवसामदि सेसा, पुरीसोदयचलिदभंगा हु ॥364॥

- अन्वयार्थ- (ताहे) उस समय में वह (चरिमसवेदो) अंतिम समयवर्ती सवेदी होता है उसके पश्चात् (अवगदवेदो हु) अपगतवेदी (सत्तकम्मंसे) सात कर्मों का (सममुवसामदि) एक समय में ही उपशमन करता है। (सेसा) शेष सर्व (पुरिसोदयचलिदभंगा हु) पुरुषवेद के उदय से चढ़े हुए जीव के समान विधान है ॥364॥

नपुंसक वेदोदय से श्रेणी आरोहण में विशेषता

नपुंसकवेद के उदय के साथ क्रोधादि कषाय से श्रेणी पर आरूढ़ जीव अंतरकरण के समय जब नपुंसकवेद का अंतर करता है, तब नपुंसकवेद की प्रथम स्थिति (नपुंसक वेद + स्त्रीवेद का उपशमन काल) प्रमाण स्थापित करता है ।

अंतरकरण के पश्चात् नपुंसकवेद को उपशमाना प्रारंभ करता है ।

नपुंसकवेद के उपशमन काल तक इसका उपशमन पूरा नहीं होता ।

अनंतर समय में स्त्रीवेद का उपशमन भी प्रारंभ हो जाता है ।

तब नपुंसकवेद और स्त्रीवेद – इन दोनों का युगपत् उपशमन चल रहा है ।

नपुंसक वेदोदय से श्रेणी आरोहण में विशेषता

जब स्त्रीवेद का उपशमन काल समाप्त होता है, तब ही नपुंसकवेद और स्त्रीवेद दोनों का युगपत् उपशमन पूर्ण करता है ।

यह ही नपुंसकवेद के उदय का अंतिम समय है ।

अनंतर समय में अपगतवेदी हो जाता है । तब पुरुषवेद की बंध-व्युच्छित्ति भी हो जाती है ।

अपगतवेदी होकर 7 नोकषायों को एक साथ उपशमित करता है ।

उतरते समय अवेदी रहते हुये 7 नोकषाय को अनुपशमित करता है । अंतर्मुहूर्त पश्चात् स्त्रीवेद और नपुंसक वेद की उपशामना युगपत नष्ट होती है । यहीं से नपुंसक वेद का उदय प्रारंभ होकर सवेदी होता है ।

शेष भंग पुरुषवेद के समान हैं ।

भिन्न वेद से आरूढ़ के वेद की प्रथम स्थिति

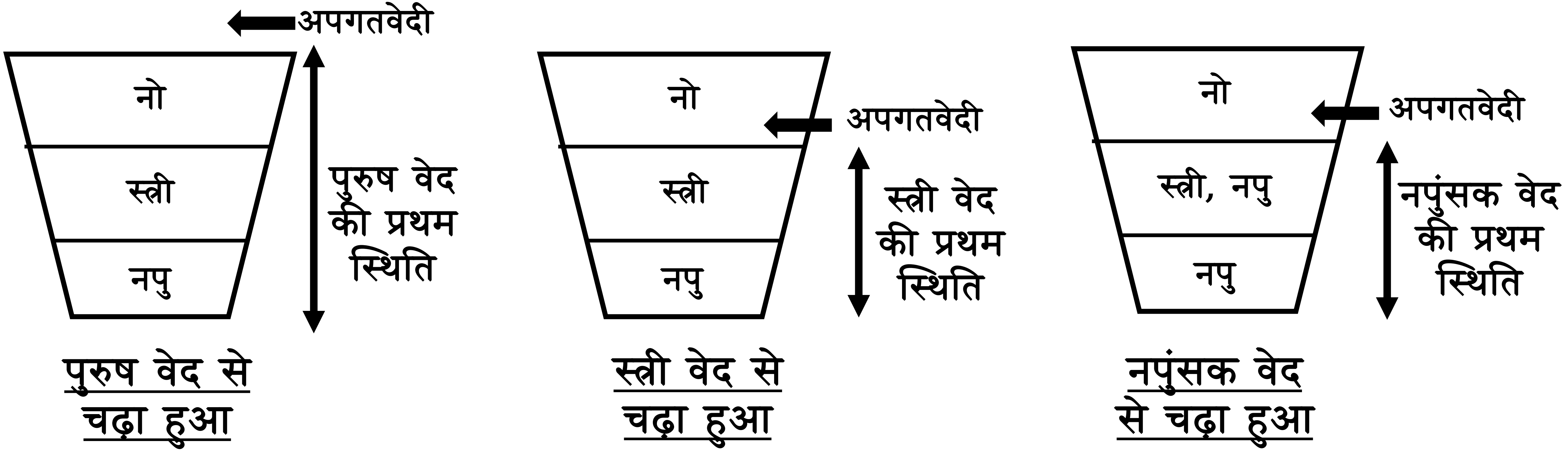

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889
- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।